रूहानी सत्संग No. K-36

हरि 'सूक्ष्म और अगम' से कैसे मिलें?

(सत्संदेश अप्रेल 1959 में प्रकाशित प्रवचन)

हर जी सुखम अगम है

किसी महापुरुष की सोहबत (संगत) एक बड़ी रूह को उभारने वाली हुआ करती है। पहलवान को देखकर ताकत का शौक़ बनता है। किसी अनुभवी पुरुष की सोहबत में अगर बैठना नसीब हो तो जीवन को उभार मिलता है, उस मण्डल में चार्ज़िंग होने के सबब से वह कुछ दौलत हमको मिलती है जो सदियों की रियाज़त (तपस्या) से नहीं मिल सकती-

हमनशीनी साअते बा औलिया।
बेहतर अज़ सदसाला ताअत बे रिया॥

अगर किसी वली अल्लाह (अनुभवी) पुरुष के चरणों में आपको एक घड़ी बैठना नसीब हो जाए, यकसूइये दिल से (एकाग्रचित होकर), वहां से वह कुछ आपको मिलता है जो सौ साल की बे रिया (निष्काम) भक्ति से भी नहीं मिल सकता। एक जलती आग है, वहां से आग ले लो, उसकी गरमी का फायदा उठा लो। उस मण्डल में चार्ज़िंग हो रही है, वह किताबों के पढ़ने से नहीं आती। तो कहते हैं सौ साल तपस्या कर लो अगर एक घड़ी भी ऐसे महापुरुषों के चरणों में बैठना नसीब हो यकसूइये दिल से, एकाग्रता से, हमें वह खमीर मिलता है, जीवन का उभार मिलता है, Life-impulse मिलती है, एक पूंजी मिलती है। वह दिनों-दिन बढ़ती है। तो जिन्होंने हज़ूर (बाबा सावन सिंह जी महाराज) के चरणों में बैठना पाया था, खुशकिस्मती थी, उस जीवन रस को वहां देख-देखकर उसका लुत्फ़ (आनंद) उठाया था, उनको वे कैसे भूल सकते हैं? सवाल तो यह है। जैसे चकोर देखती है चाँद को, चाँद ऊपर चला जाता है । उसका (चकोर का) सिर साथ ही साथ चला जाता है। दूसरी तरफ़ पीछे, चाँद पहुंचता है तो वह ज़रा भी सहारा नहीं करती कि ठहर कर मुँह दूसरी तरफ़ कर ले। उसकी चोंच पीछे ज़मीन के साथ लग जाती है, अगर फिर चाँद गायब हो जाये तो उसका क्या हश्र (हाल) होगा? यह एक मिसाल है समझाने के लिये, उन परवानों के लिये, जिन्होंने उस जाते हक़ (प्रभु) का

जहां जलवा था, उससे जो फैज़ (परमार्थ-लाभ) उठाया था, उनकी गति के लिये ये थोड़े से इशारे पेश किये गये हैं, ये हमारे दिल की तरजुमानी करते हैं (दिल की हालत बयान करते हैं) उन लोगों के दिल की जिन्होंने उनको (हज़ूर को) देख पाया था। सच्ची बात तो यह है। उन्हें की बकरत से आज आप को भी फैज मिल रहा है। उनकी क्या तामील थी? जो परम्परा से चली आई है। हम भूलते रहे, महापुरुष आकर ताज़ा करते रहे। और आज फिर हम वहीं बैठे हैं जहाँ सोज़े दिल है (दिल की तड़प है) उसके पाने के लिये सामान भी कुदरत करती है। Demand और Supply (मांग और पूर्ति) का नियम अटल है। भूखे के लिये रोटी है, प्यासे के लिये पानी है। There is food for the hungry and water for the thirsty. ऐसे महापुरुष हमेशा दुनिया में आते रहे, आते हैं और आते रहेंगे। जिन-जिन के अन्तर वह भूख बनी है, उसको मिटाने का सामान कुदरत करती है। तो उन्होंने क्या तामील दी, उसके बारे में आप को थोड़ा सा पेश किया जायेगा। वह फिर मैं अर्ज करूँ, वह तालीम कोई नई नहीं, पुरातन से पुरातन है। हम भूलते रहे, महापुरुष आकर उसको ताजा करते रहे। वह सबसे लिये एक सा मज़मून रहा। जो आत्म-तत्व का बोध है, हकीकत शनासी का मज़मून है, वह कैसे मिल सकती है? किस तरह से मिल सकती है? उसमें कौन-सी चीज़ें मददगार हो सकती हैं, कौन सी रुकावटें बनती हैं? उसको पाकर इन्सान का जीवन का नज़रिया (दृष्टिकोण) कैसे बदल जाता है? इन बातों का जिक्र कुछ इस वक्त, कुछ शाम को किया जायेगा, आपके सामने। अब हम उस महापुरुष की याद क्यों कर रहे हैं? सवाल यह है। इसलिये कि उन्होंने एक हकीकत को पाया था। उस हकीकत को जिसको सब ऋषियों, मुनियों ने महात्माओं ने, जो आज दिन तक आये, वे उसे गाते रहे।

कई तरीके से गाया जा सकता है वह प्रभु। कोई तो सिर्फ सुनी-सुनाई ही बातों पर गाता है, कोई सिर्फ ग्रन्थों ही में पढ़ी-पढ़ाई बातों पर गाता है और कोई देखकर ही गाता है। तो जिन्होंने उसको देखकर गाया है, वह कहानी क़ाबिले-एतबार (विश्वास-योग्य) है। इसका यह मतलब नहीं कि सारे ग्रन्थों-पोथियों में जो आगे लिखा है वह ग़लत है। न भई, वह भी सही है। उन अनुभवी पुरुषों ने उस प्रभु को पाया, देखा, अनुभव किया, दुनिया को पेश

किया। हम भूलते रहे, महापुरुष फिर आ-आकर ताजा करते रहे, उसी सबक को जिसको हम भूलते रहे यहां तक कि मौजूदा जिस महापुरुष की याद में हम आज बैठे हैं, उन्होंने इसी सबक को फिर अज-सरे नौ (नये सिरे से) ताज़ा किया। वह हकीकत क्या है? यह एक लाइन्तहा (अनन्त) मज़मून है, Never Ending जो कभी न खत्म होने वाला है। महापुरुष आकर गाते रहे, गा-गाकर ~~गाते रहे, गा-गाकर~~ आखिर क्या कहते रहे ? वह अभी कुछ और है-

सदियों फ़िलासफ़ी की चुनां ओ चुनीं रही,
मगर खुदा की बात जहां थी वहीं रही।

जब-जब महापुरुष आते रहे उसके गुणावाद गाते रहे। महापुरुषों से मुराद मेरी इस वक्त अनुभवी पुरुषों से है, आलिमों फ़ाजिलों (वाचक ज्ञानियों) से नहीं।

जब देखा तो गावा, तो गावे का फल पावा।

नः इति, नः इति, नः इति, सब ऋषियों-मुनियों ने गाया है, Not That, यह नहीं कुछ और है। ताज़ा भट्टी से आकर उसके गुणानुवाद गाते रहे, उस नशे में आकर। फिर आखिर क्या कहा? गुरु नानक साहब ने सारा फ़ोटो क्यों एक जपजी साहब में खींचा है।

गावे तो ताण होवे ताण॥ गावे को दात जाणे निसान॥

उसके गुणानुवाद को गा भी कौन सकता है? जिसको वह आप ही दया करे, आप ही ताकत दे, जितनी (That much) उतना ही वह उभार देता है अन्तर से। वह गाता है फिर वह Cut off हो गया, अन्तर से बन्द हो गया । तो याद रखो अनुभवी पुरुष जब गाता है तो वह मन बुद्धि के घाट पर नहीं गाता है। वह गाता चला जाता है, चला जाता है, उसको यह भी नहीं पता आगे मैंने क्या कहना है। आलिम फ़ाज़िल तो सोचता है कि अब मैंने यह कहा, अब मैंने यह कहना है। वह यह नहीं करता, तो आता है गाता चला जाता है। मगर वह मज़मून बड़ा linked (सिलसिलेवार) definite, cut and dried, to the point, (सोलह आने तुली हुई, ठोस, पक्की बात) पेश करता है। (वह) खुद भी पीछे (बाद में) सुने तो हैरान होता है यह किसने कहा-

जैसे में आवे खसम की बाणी तैसड़ा करी ज्ञान वे लालो॥

तो कई पहलू बयान किये, कि दुनिया सारी गा रही है, कोई उसकी

ताकत का अन्दाज़ा लगा कर गा रहा है, कोई यह कहता है कि वह हर जगह हाज़िर-नाज़िर है, कोई ऐसे ही उसको गाता है जैसे आसमानों में दूर बैठा है, कोई कहता है वह बुद्धि के दायरे में नहीं आ सकता है, जैसे बृहदारण्यक उपनिषद कहता है कि उसको "बुद्धि के दायरे में लाना नामुमकिन (असम्भव) है ऐसे जैसे शराब के पीने से प्यास का बुझना नामुमकिन है, जैसे रेत में से तेल का निकलना नामुमकिन है।" कोई इसी गुणानुवाद को गा रहे हैं। कइयों ने यह देखा कि यह मज़मून बयान में आ नहीं सकता। उन्होंने कहा अच्छा भई यह लाबयान है, इसको बयान करने की जरूरत ही नहीं । तो आखिर क्या फरमाया-

कथना कथी न आवे तोट॥ कथ कथ कथि कोटि कोट॥

बयान कर करके करोड़ों ही, एक दो नहीं कोटि, करोड़ों ही हार गये, फिर भी वह कथने में नहीं आ सका। वही बात तो मैंने अर्ज की।

सादियों फ़िलासफ़ी की चुनां ओ चुनी रही,
मगर खुदा की बात जहां थी वहीं रही॥

जितने वेद-शास्त्र, ग्रन्थ पोथियाँ हैं हमारे पास इन सब में उसी के गुणानुवाद गाये हुए हैं, उन महापुरुषों ने, जिन्होंने उसको पाया है। मुआफ करना पाया है से मुराद कहीं गुम नहीं हुआ था, था अन्तर में। हम फैलाव में जा रहे हैं। हाफिज़ साहब से लोगों ने पूछा, अरे भई, क्या परमात्मा है? यह दुनिया कैसे बनी? क्या हुआ, कैसे हुआ? कहने लगे भई देखो-

हदासे मुतरिबो मैं गो व राजे देहर कमतर जो।
के कस न कशूदो नकुशायद बहिकमत ई मुइम्मारा।

कहते हैं तू साकी का जिक्र कर और उसके नशे का, वह जो शराब पिलाता है हकीकत की, उस नशे को पीकर चूर हो जा ताकि अकल और फ़हम (बुद्धि) का वहां कोई गुज़र न रहे, क्योंकि बुद्धि से यह मज़मून कभी हल होने वाला है ही नहीं। यही उपनिषद कह रहा है, "इन्द्रियां दमन हों, मन खड़ा हो और बुद्धि भी स्थिर हो, तब आत्मा का साक्षात्कार होता है"। आमिल (अनुभवी) के गले में इल्म फूलों का हार है। वह एक चीज़ को कई तरीकों से पेश करता है और बस। मगर हकीकत वही है जो अनुभव करे। चाहे पढ़ा है या अनपढ़, दोनों के लिये यह मज़मून एक सा है। सबको इन्द्रियां

दमन करनी होंगी, मन खड़ा करना होगा, बुद्धि को स्थिर करके उस अनुभव को पाना है। जितनी-जितनी Vocabulary(शब्द कोश) किसी की Command पर है (जितना शब्द ज्ञान है) उसी से मिसालें देकर समझायेगा कि परमात्मा ऐसा है। तो यह कैसे पता लग सकता है कि दुनिया कब बनी, कैसे बनी, किसने बनाई? भई इसका जवाब यह देते हैं कि परमात्मा ने बनाई है। कब बनाई ? क्यों बनाई? यह उसी से चलकर पूछना चाहिये, बनाने वाले से ही पूछना चाहिये न। जब वहां हम जायेंगे न ये इन्द्रियाँ रहेंगी, न यह मन रहेगा, न यह बुद्धि रहेगी, न यह देह-ध्यास (शरीर) रहेगा। हकीकत खुलेगी। वहां सवाल का जवाब ही कोई नहीं। तो हमारे हजूर हमेशा यही जबाब दिया करते थे कि चलो भई जिसने बनाई है (सृष्टि) उससे पूछो। बड़ा Simple, बड़ा सादा जवाब है। हां सन्तों ने यह जवाब दिया है। कबीर साहब फरमाते हैं-

"बाजीगर ज्यों बाजी पाई। सब खलक़ तमाशे आई॥"

तमाशा उसने बनाया था "कुन फिय कुन हो, बस हो गया। "एको बहुश्यामा" उसको impose (थोपा) तो नहीं किया कि क्यों? उसकी खाहिश (इच्छा) थी, बना दिया । He did it. "एको कवाओ, तिस ते होय लख दरिओ"। सारी Creation (सृष्टि) into being (होने में) आ गई जब उसने चाहा । तो इसलिये जिन्होंने अनुभव किया है वे यह कहते हैं कि वह इल्लतो मालूल, cause और effect (कार्य और कारण) दोनों से परे है। समझे! देश, काल, (Time और Space) उसमें है। वह सब देश, काल का आधार है यह कह दो। अगर हमने उसको देखना हो तो हम भी उतने ही ऊंचे हों, तब देख सकेंगे। तो हाफिज़ साहब फ़रमाते हैं-

ऐ दिल जे जाँ गुज़र कुन ता जाने जाँ बबीनी।

ऐ दिल, तू अपनी जिस्म-जिस्मानियत से ऊपर आ, अपने Self से Transcend कर into the beyond (इस स्थूल देह से, पिण्ड से ऊपर दिव्य मण्डलों में आ) वह तेरी जो जान है, उसको तू देखने वाला बने।

यह जितनी स्थूल दुनिया है, स्थूल जिस्म है, Finite(सीमित) हालत में हम बैठे हैं, इससे ऊपर आओ, सूक्ष्म में, कारण में, इससे और ऊपर चलो, जितना वह ऊंचा है उतना ही तुम आओ। तुम उसको देख सकोगे। सब महापुरुष यही कहते हैं। तो गुरु अर्जुन साहब ने इसके बारे में फ़रमाया -

आप सत्त किया सब सत्त॥ आपे जाणे अपनी गत मित॥

वह आप सत् है। सत् कहते हैं अटल लाफ़ानी (अविनाशी) Unchangeable Permanence, कभी न बदलने वाली हस्ती (आस्तित्व) जो है जो उसने बनाया है यह भी सत् है Farm Change करती रहती है (शकल बदलती रहती है) मगर मिटती नहीं।

करते की कीमत न जाणे किया।

जिसने बनाया है, जो बना हुआ है उसकी कीमत को कैसे जान सकता है?

"पिता का जन्म क्या जाने पूत। राख पिरोई अपने-अपने सूत॥"

उसके आधार पर यह सब Creation (सृष्टि) चल रही है। तो कहते हैं जो उसका किया (बनाया) हुआ है उसकी कीमत को नहीं जान सकता।

नानक जो तिस भावे सो बरती आप।

It is His will and pleasure (उसकी खुशी है) जब चाहे समेट ले, जब चाहे इज़हार करे, जब चाहे लय करे, वह, मसाला हमेशा ही उसके अन्तर मौजूद है। हर बार उसको बनाना नहीं पड़ता, सिर्फ़ Inversion (समेटने) और Expression (फैलाव) का सवाल आता है। अब उसका पता कैसे लग सकता है? सवाल यह है । तो उसका पता केवल ऐसे ही पुरुषों से लग सकता है जिन्होंने उसका अनुभव किया है। न आलिम से पता लगेगा-आलिम तो पढ़ी-पढ़ाई बातें कहेगा, सुनी-सुनाई बातें करेगा। कबीर साहब को एक साहब मिले तो कहने लगे देख भाई-

तेरा मेरा मनुवा कैसे इक होई रे।

तेरे और मेरा मन कैसे मुत्तफ़िक (सहमत) हो सकता है?

मैं कहता हूँ आँखन देखी, तू कहता कागज की लेखी।

तू तो पढ़ा-पढ़ाया बयान करता है, मैं देखकर बयान करता हूँ। अब देख कर बयान तो बड़ा Clear-cut (स्पष्ट) होता है। तो इसलिये कहा, अगर उसकी हकीकत का अनुभव करना है तो हमें क्या करना होगा? किसी ऐसे पुरुष की संगत में जाओ जिसने अनुभव किया है।

सुन सन्तन की साची साखी। सो बोलें जो पेखें आखी॥

सन्तों की शहादत को सुनो, वह सच्ची है क्योंकि वे जो आंखों से देख

रहे हैं वह बयान कर रहे हैं और जो देखकर गाना है वह कुछ और है, सुना-सुनाया, पढ़ा-पढ़ाया गाना कुछ और है। तो इस पर सब महापुरुषों ने यही ज़ोर दिया है। गीता में जाईये, वहाँ भगवान कृष्ण भी यही फ़रमा रहे हैं चौथे अध्याय में "अगर तुम ज्ञान को पाना चाहते हो, किसी ऐसे महात्मा के पास जाओ जो अन्तर में परमात्मा का अनुभव कर रहा है।" फिर छठे अध्याय में इसी पर ज़ोर दिया है, कि अनुभवी पुरुष के पास जाओ, नेक-नियती से सवाल करके हर एक सवाल का जवाब लो, जब भरोसा बने, विश्वास आये तो रास्ता लेकर कमाई करो।" याद रखो महात्मा Impose (थोपते) नहीं करते, वे Develop (बढ़ाते) करते हैं Understanding (सहीनज़री) को कि चीज़ तुम में है जब appeal करती (बात समझ आती) है तो उसके मुताबिक करने से वह (शिष्य) भी उस हकीकत को देखने वाला हो जाता है जैसे यह देखता है। कौन देखता है?

सो गुरमुख देखे नैनी।

जो उस (गुर) का मुख बने, जो उसके सम्मुख बैठे, जो उसकी तामील को धारण करे, वह भी देखने वाला हो जाता है। इसलिये और और महापुरुषों ने बतलाया है, मौलाना रूम साहब फ़रमाते हैं कि -

मरदे हजी मरदे हाजी रा तलब। खाह हिन्दू, खाह तुर्को खाह अरब॥

अगर तुमको हज़ करने की, परमात्मा के देश की यात्रा की ख्वाहिश है तो किसी हाजी को साथ ले लो जिसने हज़ किया है। कौन है? चाहे हिन्दू हो, तुर्क हो, अरब हो, कोई भी हो। अनुभव का सवाल है, जैसे डॉक्टर बनना है तो किसी डॉक्टर को पकड़ो। किस समाज का हो, यह सवाल नहीं। एक साईंस है, आत्म-तत्व का बोध, आत्म-तत्व को जानना। तो किसी ऐसे अनुभवी पुरुष की साहेब अख्तियार करो जिसने अनुभव किया है। Christ (ईसा) से पूछा कि परमात्मा को कौन देखता है? फ़रमाने लगे कि Son knows the Father उसका बच्चा। जितने अनुभवी पुरुष हैं, ये सब उस (प्रभु) के बच्चे हैं। They are the children of light जब भी आते हैं दुनिया को अंधेरे से निकाल कर रोशनी दे जाते हैं, Awaken (जागृत) कर जाते हैं, Right understanding (सहीनज़री) देते हैं, और उस तरफ फिर First-hand experience (व्यक्तिगत अनुभव) भी देते हैं, पिण्ड से ऊपर आने का।

ऐ दिल जे जाँ गुजर कुन ता जाने जाँ बबीनी।

तू इस जिस्मी जान से ऊपर आ ताकि तू उसके देखने वाला बने । अब तू इन्द्रियों के घाट पर फँसा पड़ा है, इसका रूप बना बैठा है, तब तक वह हकीकत जो तुम में है, तुम उससे महरूम (खाली) हो। ग्रन्थ-पोथियों में उस हकीकत का ज़िक्र है, मगर वह हकीकत है तुम में। फिर सवाल यह आता है कि वह परमात्मा कहां है? तो इसका जवाब भी फरमाते हैं-

एह जग सच्चे की है कोठड़ी सच्चे का विच वास॥

यह सारा उसी का घर है, It is the home of the Father. इसमें वह बस रहा है, यह उसकी बनाई हुई है। वह इसमें बस रहा है। वह इकजाई (एक स्थान में स्थित) भी है और हरजाई (सर्वत्र स्थित) भी है। यह जिस्म है, मिसाल के तौर पर। जिस्म को कौन चला रहा है? आत्मा! आत्मा का वास इस जिस्म में एक जगह भी है और हर जगह भी है। आप देखते हो कि कोई आदमी जब मरता है तो नीचे चक्र टूटते हैं, कण्ढ बजता है, आँखें फिर जाती हैं, वह जिन्दी है। रूह का ठिकाना यहां है (दोनों आँखों के पीछे) यहां से सारे जिस्म को सत्ता मिल रही है। तो इसी तरह परमात्मा एकजाई (एक स्थान में स्थित) भी है और हरजाई (सर्वत्र) भी है। सारा संसार उसी का जिस्म है, उसी का घर है। अरे भई उसको कहाँ ढूढोगे? वह हर एक जगह है। खाली मन्दिरों-मस्जिदों में ही नहीं, बल्कि कोई ऐसी जगह नहीं जहां वह नहीं है। तो उसकी तलाश करने के लिये, All is holy where devotion kneels जहां भी भक्ति-भाव से सिर निवाओ वहीं वह है, यह अनुभवी पुरुष हमें उपदेश देते हैं। मैं इंग्लैण्ड में गया। मैंने वहां Talk दी। मैंने कहा, - God does not reside in Temples made of stones by the hands of man (परमात्मा इन्सानी हाथों से बने ईंट,पत्थरों के मकानों में नहीं रहता) यह क्राईस्ट ने कहा। सारे महापुरुष यही कहते हैं। और- You cannot pray God with hands इन्द्रियों के घाट से उसकी पूजा नहीं कर सकते But with the Spirit (बल्कि आत्मा से) तो एक पादरी स्टब्स थे, उठ खड़े हुए। कहने लगे, With one word of yours you have thrown an atom bomb over all our churchianity कि एक लफ़्ज कहने से सारी (Churchianity) खत्म हो गई। अरे भाई बात तो यह सही है। Churches

(मन्दिर गिरजे) हम लोगों ने बनाए, धर्म स्थान हम लोगों ने बनाए । वह (प्रभु कहां बसता है? अरे भाई, वह बसता है तो कुदरत ने जिस मकान को बनाया है उस मकान में बसता है। वह मकान कौन है? या यह जिस्म या यह सारी दुनिया। बाहर तो हमने नमूने बनाए थे शरीर पर। इस शरीर के नमूने पर Dome shaped सिर की गुम्बददार शकल जैसे या Forehead-shaped जैसे मस्जिदें या Nose shaped (नाक की शकल के) गिरजे। तो ये हम लोगों ने बनाए न, उसके गुणावाद गाने के लिए। अरे भाई, जो वहां है वह और भी कहीं है। हाँ हमारे दिल में सब मन्दिरों, मस्जिदों के लिए इज्जत हैं कि वहां बैठकर प्रभु के गुणानुवाद गाए जाते हैं। तो हकीकत शनासी क्या है?

एह शरीर हरिमन्दिर है इसमें सच्चे की जोत॥

और यह जगत हरि मन्दिर है-

एह जग सच्चे को है कोठड़ी सच्चे का विच वास॥

यहाँ कई भाई आया करते हैं, पूछते हैं यहां कौन सा मन्दिर बनाया हुआ है। मैं कहता हूं, भई मैंने तो कोई मन्दिर, मस्जिद नहीं बनाया है। क्यों? मैं तो यही समझता हूं कि यह शरीर ही हरिमन्दिर है और बाहर नीचे जमीन और ऊपर आसमान। यहां इसमें कोई शक नहीं कि एक शेड बना रखा है धूप और बारिश में काम आ जायें, धूप और बारिश से बचत हो जाये। बाकी कहां वह (प्रभु) नहीं? सवाल तो यह है। गुरु नानक साहब थे। जब मक्के शरीफ गए तो वहां कहते हैं कि पाँव मक्के की तरफ करके लेट गए। वहां का जो खाकरोब था (सफाई करने वाला) वह आया कि अरे काफिर क्या करता है। पाँव किस तरफ पसार रखे हैं, खुदा के घर की तरफ। तो कहने लगे कि भई मुझे तो हर तरफ खुदा का घर नजर आता है। कहां वह नहीं है? जिस तरफ तुम नहीं समझते हो वहां करके देख लो। तो ऐसे अनुभवी पुरुषों का मैं अर्ज कर रहा था, वह खुदा है, जो अनुभवी हैं उनके लिए । हमारे लिए खुदा कहां? हमें तो अपने आपको ही होश नहीं। यह उन महापुरुषों की कहानी है जिन्होंने उस (प्रभु) को पाया है। और यह एक ऐसी शक्ति है जो मन और बुद्धि से परे है, जब तक हम भी उसी लैवल में नहीं आयेंगे उस (प्रभु) को नहीं पा सकते हैं। मन खड़ा हो, इन्द्रियाँ दमन हों, बुद्धि भी स्थिर हो तब आत्मा का साक्षात्कार होता है।

एवड ऊचा होय को॥ तिस ऊचे को जाणे सो॥

जितना लैवल उसका है उसी लैवल पर आकर वह नजर आयेगा न। यह देखिये हवा है। हमें उसमें कुछ नजर नहीं आ रहा। क्या इस हवा में कुछ नहीं? है तो सही मगर वह सूक्ष्म है। हमारी आँख स्थूल है। अगर हम उसको अब देखना चाहते हैं तो यह जो कुछ इसमें है वह इतना Magnify (बड़ा) हो जाये कि हमारी आँख के लैवल में आ जाये, या हमारी आँख इतनी सूक्ष्म बन जाये कि उस लैवल में आ जाये, फिर हम उसको देख सकेंगे। दूरबीन (यंत्र) से अगर आप इसको देखें तो यहां कीड़े-मकोड़े भरे हुए नजर आएंगे जो अब भी हैं। अरे भाई अनुभवी पुरुषों की जब वह सूक्ष्म आँख खुलती है न, दिव्य-चक्षु जिसको कहा है तो वह देखते हैं भई सब जगह वह है। वे देखकर बयान करते हैं। सब महापुरुषों ने इसका जिक्र किया है। हम सब उसी एक के पुजारी हैं। यह शक्ति असल में एक है। मालिक एक है, दो नहीं, चार नहीं, पाँच नहीं, सात नहीं, एक ही पावर है जो सबको जीवन्त (सजीव) कर रही है। यही जैनमत वाले कहते हैं। एक ही आत्मा सब में भरपूर है। यही वह एकंकार है यह उसी का सब पसारा है। उसी का, पर एक भी यह एक मितने (मापने) के लिए है याद रखो, Finite Terms (सीमित परिभाषा) है। हम Finite (सीमाओं से घिरे हुए) हैं। उसको समझने के लिए एक Finite Term इस्तेमाल की मगर न वह एक है न दो है। एक का सवाल आपको दो पर ले आयेगा न। तो इसलिए महापुरुषों ने कहा -

इस एके का जाणे भेओ॥ सोई करता सोई देओ॥

जिसको यह एक जिसका Name one, (जब का शब्द) बोध करा रहा है, अगर उसको तुम जान जाओ तब हकीकत के जानने वाले हुये। तो इसलिये यह एक-रस है, यह शक्ति जो है ब्रह्मण्ड में। जान स्टूअर्ट मिल, मशहूर Scientist (वैज्ञानिक) थे, वह इस नतीजे पर पहुँचे कि दुनिया में यह शक्ति असल में एक है और यह एक-रस है, और एक ही खास मिक़दार (मात्रा) में मौजूद है जो न कभी बढ़ती है और न कम होती है। "जो कुछ पाया सो इक बार", गुरु नानक साहब जपजी साहब में फ़रमाते हैं। एक बार उसने Creation (रचना) का सिलसिला बना दिया रोज-रोज उसको नये सामान नहीं पैदा करना। वह न घटती है न बढ़ती है। उसमें वह पूर्ण घटती-बढ़ती

हमारी जो लैवल (स्तर) है उससे मालूम होता है। वह एक-रस पूर्ण है। पूर्ण के साथ जो लगा वह पूर्ण हो गया। तो इसलिये हमारे सामने आदर्श क्या रहा सब मनुष्यों के सामने।

सैकड़ों आशिक हैं दिलाराम सबका एक है।
मज़हबो मिल्लत जुदा हैं काम सबका एक है॥

तो हम किसी समाज में भी हैं, हम उसी एक के पुजारी हैं। उसको राम कहो, रहीम कहो, अल्लाह कहो, ये नाम लोगों ने बरते हैं। तो उस मालिक के मुतल्लिक सब महात्माओं की बाणियों में, सब ग्रन्थों-पोथियों में ज़िक्र आया कि वह है। यजुर्वेद में ज़िक्र आता है कि उस खालिक ने सारे जहान को पैदा किया। ऋग्वेद में भी इसी का ज़िक्र आया है कि उस परमात्मा की तारीफ़ करो जिसने सारा जहान बनाया है। संस्कृत में है यह अलेहदा बात रही मगर मतलब यही है। भगवत् गीता में इसी का ज़िक्र दिया है। वहां कहते हैं मैं ही सारे जगत का आधार हूं, इस दुनिया का कारखाना मुझसे ही चल रहा है। इशारा दिया है उस असल I-hood में जाकर दुनिया को पेश किया है कि भई जो आदमी इस बात को जानता हैं, मुझे प्रेम से याद करते हैं। वह सब जगह है, हमारा जीवन आधार है, कोई ऐसी जगह नहीं अन्दर बाहर वही है। "सोई सूक्ष्म सोई स्थूल" अन्दर भी वही बाहर भी वही है, मगर वह आँख नहीं बनी न, जिससे नज़र आये। अगर हमको भी Microscope (खुर्दबीन) मिल जाये या वह अन्तर की आँख खुल जाये, किसी अनुभवी पुरुष के सन्मुख बैठे, गुरुमुख बने-

सो गुरमुख वेखै नैणी।

तो हम भी देखने वाले बन जायेंगे। तो सारे महापुरुषों ने यही कहा-

एक पिता एकस के हम बारिक।

हम सब एक ही के बच्चे हैं। सब हम भाई हैं। यह Right understanding थी जो कल ज़िक्र आया था शाम को। तो सब महापुरुष यह कहते हैं-

एक नूर ते सब जग उपजेया कौन भले को मन्दे॥

यह कबीर कह रहे हैं। Christ (ईसा) भी यही कहता है, In the beginning was the Word, Word was with God, Word was God

(आरंभ में शब्द था, शब्द प्रभु के साथ था, शब्द खुद प्रभु था) यह सारी सृष्टि उसके बाद बनी। भगवान में प्रजापति करके बयान आया है। बिल्कुल यही लफ़्ज आये हैं कि प्रजापति शुरु में था, और वह शब्द था, शब्द उसके साथ था, सारी रचना पीछे बनी। बिल्कुल Exact, word by word लफ़्ज-बालफ्ज मिलता है। तो कोई अनुभवी पुरुष जो है, वह हमेशा यही बयान करता है कि भई वह (प्रभु) है। देखकर बयान किया है। जब देखकर बयान किया है तो उसमें शक की गुंजायश नहीं। आप कई भाई यह ख्याल करते होंगे, बाज़े-गाज़े लोग जिन्होंने यह कहा कि परमात्मा के मुतल्लिक कुछ नहीं कहा, Tao (ताओ) ने यह कहा, कि मैं उसका नाम तो नहीं जानता, मगर मैं उसको ताओ करके बयान करता हूँ। ताओ-ताओज़्म करके Tao की जो तालीम है, वह मशहूर है। तो कहता है मैं उसके नाम को तो नहीं जानता, बयान नहीं करता, मगर मैं उसको ताओ करके बयान करता हूं। ~~मगर~~ वह बड़ी शान्ति का समुद्र है। इसी तरह जैनियों में महावीर स्वामी और महात्मा जो आये उन्होंने भी यही कहा कि एक आत्मा सब संसार में भरपूर है। जब वह सबमें है तो सबसे प्यार करो। किसी को दुख न दो, यह सबसे बढ़-चढ़ कर धर्म है। महात्मा बुद्ध के मुतल्लिक बाज़ (कुछ) भाइयों को यह ख़याल है कि परमात्मा के मुतल्लिक उन्होंने कुछ नहीं कहा। अरे भई कुछ कहा तो है। एक बार कई भाई गये उनके पास। कहने लगे कि परमात्मा है। कुछ कहे लगे कि परमात्मा नहीं है। वे (महात्मा बुद्ध) इस झगड़े में नहीं पड़ना चाहते थे। कहने लगे, जो मानने वाले थे उनसे, कि अच्छा अगर परमात्मा है, तो सब में है न। तो सबसे प्यार करो, किसी को दुख न दो। जो परमात्मा को कहते थे कि कोई नहीं है, उनसे कहने लगे, भई देखो अच्छा न ही सही, चलो तुम्हारी ही बात रहे। लोगों पर रहम करना अच्छी चीज़ है, दूसरों को दुख न देना अच्छा है। सबसे प्यार करो ये बातें तो अच्छी हैं न । तुम यही करो। वैसे दबे लफ़्जों में, इस बात का उन्होंने इकरार तो किया मगर साफ तौर से एक बात Clear-Cut (स्पष्ट) ~~हाँ~~ नहीं कही मगर यह जरूर कहा कि वह हकीकत, Nebulism करके बयान किया है या निर्वाण, क्या चीज़ है? शून्य नहीं। उसमें कहा, एक आनंद का बड़ा सोमा (स्रोत) है, निर्वाण में। इधर सन्तों की फिलास्फी में आता है सुन्न और महासुन्न। ~~यह~~ मायने ~~वह~~ नहीं कि वहां कुछ

नहीं है। कुछ है अपने आप है, जो लफ़्ज़ों में बयान नहीं आ सकता है, तो शून्य और निर्वाण, Nebulism का तो ज़िक्र किया है। उसकी तारीफ़ भी यह दी है जो मैं अर्ज़ कर रहा हूँ मगर इसके देने के बावजूद भी, उन्होंने बड़े साफ़ लफ़्ज़ों में बयान किया है कि, Self is the refuge of the self. लफ़्ज को Mark करिये। हमारी जो Self है, यह बाहरी Self का एक सहारा है। एक और Self का ज़िक्र किया है, और जो लोग उसमें Refuge (आश्रय) लेंगे, वे अमर जीवन को पा जायेंगे। हम कैसे उस Refuge में जा सकते हैं? वहां बयान किया कि सब तरफ़ से हटो, Be Desireless (कामना विहीन हो जाओ), इन्द्रियों का घाट छोड़ो। Right View (विवेक) पैदा करो, Right Knowledge (सही ज्ञान) को हासिल करो। आत्मा कुछ है चेतन चीज। यह बाहर जड़ है। इसका भी ज़िक्र किया है। और फिर यह कहा कि तुम अपने-आपको अपने-आप से जगाओ। एक और लफ़्ज कहा है, Rise thyself by the self. कोई और Self है न ! Overself, उसका ज़िक्र तो किया है मगर क्योंकि किसी को कहो कि परमात्मा है या नहीं है- उस वक्त के हालात कुछ ऐसे थे कि बड़ी Sacrifices (कुरबानियां) करनी पड़ीं, बड़े लोगों को हवन-कुण्डों में डाल दिया गया और सब Sacrifices का सिलसिला चल रहा था। यहां तक कि लोग हैवानों को भी Sacrifice करते थे और इससे बढ़कर भी। इसलिये उन्होंने (महात्मा बुद्ध ने) यह आवाज़ उठाई, भई सबके अन्तर वह है। सबके ऊपर रहम (दया) करो। रहा परमात्मा का सवाल, जो मानते हैं मानो, जो नहीं मानते हैं न मानो, मगर ये गुण तो अच्छे हैं कि नहीं? तो सब महापुरुषों ने इस बात का ज़िक्र हमेशा किया है। यहां भी मुझे इत्तफाक हुआ बौधों के यहां मुझे प्रेजिडेंट चुना। वहां मेरी Talk (भाषण) हुई। वहां उन्होंने कहा, No Soul, No God, तो मैंने उनको यही पेश किया कि बात तो यह है कि सब महापुरुष एक ही चीज़ को बयान करते हैं। एक लाबयान को बयान में न आ सकने के लिये Condused थे। वह कहते हैं एक चीज़ बयान में आ नहीं सकती है, इसलिये इस मज़मून को छोड़ ही दी। हाफ़िज़ साहब ने भी यही कहा -

हदीसे मुतरिबो मैं गौ व राज़े देहर कमतर जो।
के कस नकशूदो नकुशायद बहिकमत ई मुईम्मारा॥

कि वह बुद्धि के दायरे में आने वाली वस्तु नहीं। भई है। तुम (उसे) देख सकते हो। जाओ किसी अनुभवी पुरुष के पास। तो सब महापुरुषों ने इस बात पर जोर दिया है। अब सवाल यह है, क्या हम उसको देख सकते हैं? इसके लिये मैं एक शब्द आपके सामने श्री गुरु अमरदास जी साहब का पेश करूंगा, गौर से सुनिये वे क्या फ़रमाते हैं।

जितनी धर्म पुस्तकें हैं वे सब यही कहती हैं कि परमात्मा है, और परमात्मा जो है तो क्या हम उसको देख सकते हैं? वह कब का है? He is the first and last (वह आदि और अन्त है)। यही Chirst (मसीह) ने कहा है, I am the first and I am the last. यही कुरान शरीफ़ कहती है कि वह खुदा ऐसी जात (अस्तित्व) है जिसमें कि घटता-बढ़ता नहीं है। वह अपने-आप में कायमबिल-जात (स्वयंस्थित) हैं, यानी इस बात पर सब महापुरुष मुत्तफिक (सहमत) हैं कि कोई ताकत है। क्या हम उसको देख सकते हैं? सवाल यह है। तो उसके जवाब में बड़ा अच्छा शब्द श्री गुरु अमरदास जी साहब का, जो सत्तर बहत्तर साल की तलाश के बाद अनुभव मिला है, यह बयान कर रहे हैं। गौर से सुनिये :

(1) हरि जी सूखम अगम है कित बिध मिलेया जाये॥

श्री गुरु अमरदास जी फ़रमाते हैं, हे परमात्मा, मगर वह अति सूक्ष्म और अगम है। अब हम उसको कैसे पा सकते हैं? कौन सी विधि है? यह एक ऐसा सवाल है जो सबके सामने है। क्या हम उसको देख सकते हैं? सवाल यह आता है। हाँ भई, महात्मा कहते हैं, देख सकते हैं। दो किस्म के बयान हमको मिलते हैं महापुरुषों की बाणियों में। एक तो यह कि उसको किसी ने नहीं देखा है। Nobody has seen God. किसी ने नहीं देखा और यह भी कि उन्होंने देखा है -

नानक का पातशाह दिस्से ज़ाहिरा॥

Behold the Lord ! यह क्राईस्ट ने कहा। तो ऐसे बयान भी मिलते हैं। यह मुत्तज़ाद (विपरीत) मालूम होते हैं, पर मुत्तज़ाद नहीं है। Defferent Phases (अलग-अलग पहलू) हैं जिन का ज़िक्र किया गया। परमात्मा, एक वह ताकत है जो अभी into being (अस्तित्व में) नहीं आई है, जिसको हम Absolute God कहते हैं, अशब्द और अनाम करके बयान करते हैं। वह

होने का मुकाम है। उसमें सारा मसाला भरा पड़ा है। जब उसने विश्व को पैदा किया, सारे महापुरुषों ने यही कहा। ईसा ने यही कहा, Lo! the creation came into being. उसके इज़हार से है न ! तो जो ताकत उसकी इज़हार में आई है उसको तो हम देख भी सकते हैं और सुन भी सकते है। जो लय होने का मुकाम है वहन किसी ने देखा न सुना। तो सारे महापुरुषों ने यही कहा। आप को पता हो स्वामी विवेकानंद नास्तिक थे पहले। शुरू-शुरू में बाम्बे प्रेजीडेंसी में लोगों को Challenge (चुनौती) करते थे कि है कोई जो कहता है कि परमात्मा है? परमात्मा कहाँ है? तो अनुभव का सवाल है। उस ज़माने में रामकृष्ण परमहंस जी थे कलकत्ते में। उनको कहा, जाओ, वहां जाओ? गये तो याद रखो ऐसे महापुरुष Acting posing (बनावट) नहीं जानते, सादा, जैसी रहनी अंदर वैसी बाहर। वह धोती बांधे कुरता पहने हुये फिर रहे थे। कहने लगे (लोग) यह महात्मा है। तो कहने लगे, ऐ महात्मा! क्या तूने परमात्मा देगा है? Master ! have you seen God?" कहने लगे, हां बच्चा मैं उस को देख रहा हूं जैसे मैं तुझको देख रहा हूं, बल्कि इससे भी ज्यादा सफ़ाई के साथ हमारे हज़ूर (बाबा सावन सिंह जी) से सवाल किया है कि क्या तुमने खण्ड ब्रह्मण्ड, परमात्मा देखा है? कि गुरु ने दिखाया है । इकरार तो करते हैं न कि देखा है। देखने वाले की बात कुछ और होती है। तो वह देखा जा सकता है। अनुभवी पुरुष देखते हैं उसको। और दूसरे कौन देखते हैं? And others whom the son reveals. दूसरे वे लोक जिनको उसका बच्चा दिखाये, इज़हार करे। क्योंकि वह अति सूक्ष्म और अगम है, जब तक हम उसी लैवल पर नहीं जाते उसको नहीं पा सकते। मैंने अभी मिसाल पेश की थी कि हवा में कुछ नहीं नजर आता है। मगर सिर्फ़ उसको Magnify करने का या अपनी वृत्ति इतनी सूक्ष्म वृत्ति, आप बनाते हैं जिससे वह नज़र आता है। बस। हम इस वक्त कहां है? हमारी आत्मा इस वक्त मन के अधीन, मन आगे इन्द्रियों के अधीन है। इन्द्रियों को भोग-रस खैंच रहे हैं, फैलाव में जा रहे हैं, अपने-आप की सुधि नहीं। शरीर का रूप और जगह का रूप बन बैठे हैं। जब तक इससे हम ऊपर Rise न करें (पिण्ड से ऊपर न आयें) काम नहीं बनता। जो चीज़ जहां है वहां मिलेगी न।

वस्तु कहीं ढूंढे कहीं केहि विधि आवे हाथ।
कहें कबीर तब पाइये जो भेदी लीजे साथ।।

चीज़ कहीं और हो, तुम तलाश उसे कहीं और करो, वह अति सूक्ष्म और अगम है, अदृष्ट और अगोचर है, तुम उसको इन्द्रियों के घाट द्वारा पाना चाहते हो तो कैसे पाओगे? तो सवाल कर रहे हैं कि हम उसको, वह हरि जो अति सूक्ष्म और अगम है, कैसे मिले? हमको अब मिलना तो साबत (सिद्ध)हुआ न, कि महापुरुषों ने देखा है और दूसरे भी देख सकते हैं।

धुर खसमे का हुक्म पया बिन सतगुर चेतेया न जाये।

और

बिन गुर पूरे कोई न पावे लख कोटि जे करम कमावे।।

वह गुरु या अनुभवी पुरुष क्या करता है? तुमको उस Level (स्तर) पर लाता है जिस लैवल पर वह नज़र आता है। वह इज़हार की सूरत क्या नज़र आती है? सवाल यह है । उसके मुतल्लिक आपको पता है कि जब यह हिलोर हुई, Vibration हुई, "एको बहु श्याम" या "एको कवाओ तिसते होये लख दरियाओ", जब into being इज़हार में आया, उसमें Vibration हुई Vibration में दो चीज़ें बनती हैं, एक Light (ज्योति) एक Sound (ध्वनि)। परमात्मा को ज्योति-स्वरूप करके बयान किया है सब महापुरुषों ने। ग्रन्थ-पोथियां यही कहती हैं, God is Light, खुदा नूर है और परमात्मा प्रणव की ध्वनि है, उद्गीत है, Music of the spheres, उसको Plato (प्लेटो) कहता है। Socrates (सुकरात) ने कहा कि मुझे एक आवाज़ सुनाई दी जो मुझे खैंच कर एक नई दुनिया में ले गई। तो सब महापुरुषों ने इसका ज़िक्र किया। तो जो इज़हार में ताकत आई है उसको हम देख भी सकते हैं। वह ज्योति-स्वरूप है और वह प्रणव की ध्वनि है, उद्गीत है, Music of the Spheres है जिसको अखण्ड-कीर्तन करके बयान करते हैं, अनहद की ध्वनि करके भी कहा है। इसके आगे Stages (दर्जे) हैं। तो अन्तर में दो ही मार्ग हैं, एक ज्योति मार्ग, एक श्रुति मार्ग। जो ज्योति मार्ग है उसमें जो रूह जाती है, भगवान कृष्ण फरमाते हैं कि ऐसी रूह फिर वापस दुनिया में नहीं आती है। साफ कहा है, दो ही रास्ते हैं । एक पितृयान, एक देवियान पन्थ है। पितृयान पन्थ है जो कर्म काण्ड का है। इसमें रूह आती

जाती रहती है। "स्वर्ग नर्क फिर-फिर औतार।" भगवान कृष्ण ने फरमाया है कि नेक और बद कर्म दोनों ही जीव के बांधने के लिये एक जैसे हैं, जैसे सोने की बेड़ी और लौहे की बेड़ी। समझे ! निःकर्म होकर इन्सान छूट सकता है, नहीं तो "नर्क-स्वर्ग फिर-फिर औतार"। और जो अन्तर में द्योति मार्ग में चलती है रूह, वह वापस नहीं आती। और इस ज्योति के विकास के लिये बड़े भारी ज़ोरदार लफ़्ज़ों में सब महापुरुषों ने बयान किया कि जीते जी तुम ज्योति-मार्ग में जाओ। सनातनी भाइयों में आता है जीते जी दीवा नहीं मन्सा जायेगा तो बेगते ही मर जायेंगे। बड़ी भारी आवश्यकता है। तो Inner Hall में जो रूह जायेगी, (अन्तर दिव्य मण्डलों में जो रूह जायेगी) All glory & beauty is in you, उस महारस को पाओगे, बाहर के रस फीके पड़ जायेंगे। ऐसी रूह फिर वापस क्यों आयेगी? तो कौन देख सकता है उस ज्योति के विकास को? जो देखता है उसी का नाम खालसा है।

पूरण जोत जगे घट में, तब खालिस ताहि नखालस जानो।

समझे। उसी का नाम मुसलमान है जो कोहेतूर पर चढ़कर खुदा के नूर को देखता है। ये इशारे हैं। पिण्ड को छोड़कर ऊपर चलो। उसी का नाम हिन्दू है जो परमात्मा की ज्योति के दर्शन करता है। जो Light of God को देखते है उसी का नाम ईसाई है। सारे महापुरुषों ने यही कहा। Unstacked Fire उसको जोरास्टर ने बयान किया, जो बगैर जलाये के जल रही है। ज्योति का विकास है, इसलिये उनको आतिश-परस्त कुरस्त भी कहते हैं। वह कैसी आतिश (आग) है जो बगैर Stack किये जल रही है अपने आप। तो इशारे का विकास देख सकते हैं। ऐसी प्रणव की ध्वनि को सुन सकते हैं। अब जो इस स्याही के परदे को हटा सकता है, उसका नाम है गुरु । समझे

गुरु काढ तली दिखलाया ॥

और कहा-

परदा दूर करे आँखन का निज दर्शन दिखलावे।

हमारी सुरत को देह-ध्यास से ऊपर लाये, Inner Eye (अन्तर की आँख) को खोले । फिर उसको देखेंगे।

दस इन्द्रे कर राखे बास।। तांके आत्मे होय परगास॥

जो दस इन्द्रियों को दमन कर ले, Outgoing Faculties (बाहरी

वृत्तियाँ को Invert (अन्तर्मुखी) करले, Control (काबू) करले, अन्तर्मुख खड़ा हो, तो वहां क्या होगा? प्रकाश हो जायेगा। You see the light of heaven, यही Christ ने कहा- "If you shut the ten doors of the body, you will see the light of heaven." तो हम उसको देख सकते हैं। कौन?

सो गुरमुख वेखै नैनी।

जो गुरमुख बने, सन्मुख बैठे किसी ऐसे अनुभवी पुरुष के, उसका क्या काम है? हम इस वक्त आत्मा-देहधारी हुये देह रूप में बने बैठे हैं, अपने आप को भूल चुके हैं। वह Analyse करने का Way up करता है (पिण्ड से ऊपर आने का रास्ता देता है), How to rise above body consciousness (कैसे पिण्ड से ऊपर आना है), तवज्जो का उभार दे कर Inner (अंतर की) आँख खोल करके अन्तर में ज्योति का विकास करता है, यह देखने वाला बन जाता है। तो गुरुमुख होने पर वह आँख खुलती है। है सबके अन्तर अब भी। अंधों के अन्तर भी है, आँखों वालों के अन्तर भी है, उसी आँख को खोलने मकसूद (उद्देश्य) है हमारे सामने। तो उस आँख के खुलने पर सब महापुरुषों ने कहा हम उसको देख सकते हैं। Christ (ईसा) ने यही कहा, Eye are the windows of the soul, आँखें इस रूह की खिड़कियां हैं जिससे हम बाहर झांकते हैं। "If thine eye be single thy whole being shall be full of light" अगर तुम्हारी एक आँख बन जाये, दो से एक तो नूर भर जायेगा। "If you shut the doors of the temple of thy body you will see the light of heaven. सब महापुरुष यही कहते हैं। यही भगवान कृष्ण ने फरमाया कि तुम मुझ को इन चमड़े की आँखों से नहीं देख सकते, बल्कि उस दिव्य-चक्षु से जो मैंने तुम को बख्शी है। "दिव्य-चक्षु" कहो, Latent Eye कहो, गुप्त आँख कहो, "गुप्त नाम परगाजा"। जो वह आँख खोल सकता है, वह कौन देता है? गुरु देता है। जो देता है, दे सकता है, उसका नाम साधु, सन्त और महात्मा है सच्चे मायनों में।

साध के संग वस्त अगोचर मिले॥

तो हम किस नतीजे पर पहुंचे कि हम उस (प्रभु) को देख सकते हैं। यही गुरु अमरदास जी को हकीकत मिली न कि हरि जी बड़ा सूक्ष्म और अगम है,

हम उसको कैसे देख सकते हैं? हम स्थूल हैं। जितना वह ऊंचा है उसी लैवल पर आकर देख सकेंगे न! है तो सही, सब महापुरुषों ने देखा है। जब अनुभवी पुरुष मिलेंगे हम भी देखने वाले बन जायेंगे। तो खुद ही सवाल कर रहे हैं, आगे खुद ही जवाब देंगे कि कैसे हम उसका अनुभव कर सकते हैं।

(2) हर जी सूखम अगम है, कित विध मिलेया जाये।।
गुर के सबद भ्रम कट्टिये, अचिन्त बसे मन आये।।

कहते हैं कि अगर हम उसको अन्तर में इज़हार (प्रकट) करना चाहते हैं बगैर किसी तशवीश (परेशानी) के तो गुरु के शब्द की कमाई करो। शब्द किस को कहते हैं? शब्द दो किस्म का है। एक तो बाहरी शब्द जो हम बोल रहे हैं, गाना-बजाना। यह एक ऐसा शब्द है जो हमें फैलाव में ले जाने वाला है। एक और शब्द है।

एक सबद गुरदेव का।

जो गुरुदेव द्वारा मिलता है। समझे! उससे जीव का कल्याण है, अगर कोई अनुभवी पुरुष मिलकर हमें उस शब्द पावर से जोड़ दे। शब्द किसको कहते हैं? फिर सवाल आता है।

उतपत परले सबदे होवे।। सबदे ही फिर ओपत होवे।।

उत्पत्ति और प्रलय जिस ताकत के आधार पर हो रही है और ~~सृष्टि~~, दुबारा सृष्टि की शुरूआत जिस ताकत के आधार पर होती है उस ताकत का नाम है शब्द। परमात्मा अशब्द है। जब वह into being (होने में) या इज़हार में आया, उसको शब्द कहा है। तो उसके लिये तारीफ़ की, वह कुल-मालिक है, शब्द जो इज़हार में आया है।

आपे कवला कंत आप।। आपे रावै शब्द थाप।।

वह अपने-आप है जो शब्द इज़हार में आता है, सारी रचना को आधार दे रहा है शब्द रूप में होकर। तो शब्द अक्षर नहीं, बोलना-बालना नहीं, बाहरी गाना-बजाना नहीं, शब्द पावर है जो खण्डों-ब्रह्मण्डों को आधार दे रही है। जब तक वह अन्तर में प्रकट नहीं होती काम नहीं बनता। वह इज़हार है। उसमें दो सूरतें हैं फिर शब्द में। एक तो यह है-

ध्रु उपजै सबद निशान।।

उसमें ध्वनि का विकास होता है, ध्वनि प्रकट होती है, यह निशानी है शब्द की।

धुन आने गगन ते सो मेरा गुरदेव।।

जो उस ध्वनि को गगन से हमें सुना दे उसका नाम गुरदेव है। जो सुना सके। और गुरु लफ़्ज 'गिरी' धातु से निकलता है जिसके मायने हैं जो शब्द को सुना सके, शब्द से जोड़ सके। जो जुड़ा है वही जोड़ेगा न!

कोई जन हर स्यों देवे जोड़।।

तो कहते हैं ऐसा शब्द जो सारे खण्डों-ब्रह्मण्डों को लिये खड़ा है, वह गुरुद्वारा मिलता है। अगर मिल जाये तो क्या नतीजा होता है? फरमाते हैं, "अचिंत बसे मन आये।" वह इसका इज़हार है दुनिया में। अब उसका Contact (संपर्क) कहाँ मिलता है? वह बाहरी इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर मिलता है, जब तक आप उसी लैवल पर न आएं उसका ताल्लुक नहीं मिलता । और उस शब्द का इज़हार क्या है? Light Principle और Sound Principle, ज्योति का विकास और प्रणव की ध्वनि का जारी होना, उद्गीत कहो। तो कहते हैं उसके साथ अगर लगो तो -

सबद मिले ताँ हरि मिले सेवा पवे सब थाय।।

अगर शब्द का Contact मिल जाये, समझो वह हरि मिल गया। वह हरि Lowest link इज़हार का है जो सबको आधार दे रहा है। God into expression power कहो। कहते हैं जब उसका Contact (संपर्क) मिल जाए समझो तुमको हरि मिला है। वह तुमको कहाँ पहुंचाएगा? अशब्द में! उसमें दो सूरतें इज़हार की हैं। एक Light एक Sound, एक ज्योति का विकास, एक श्रुति। तो अन्तर में दो ही मार्ग हैं। एक ज्योति मार्ग, एक श्रुति मार्ग। बाज़ लोग केवल ज्योति मार्ग से ही जाते हैं। वे भी ज्योति में घिर जाते हैं, आगे निकलने का कोई रास्ता नज़र नहीं आता तो वहाँ वह श्रुति मार्ग काम करता है। दोनों मिल कर पूर्ण Way back to God (निज घर, प्रभु के घर वापस जाने का रास्ता) हैं। तो फरमाते हैं कि अगर हमको शब्द मिल जाये, जो गुरु द्वारा मिलता है, तो वह परमात्मा अंचित ही मन में बस जाता है। तुमको Anxiety (चिन्ता) की ज़रूरत नहीं। वही शब्द सच्चे मायनों में गुरु है। समझे!

शब्द गुरु सुरत धुन चेला।

और

शब्द गुर पीरा गहर गम्भीरा बिन शब्दे जग बौरानं।।

वह सच्चे मायनों में गुरु है, वह शब्द जिस जिस्म में मुजस्सम, (जिस देह में वह प्रकट होता है) World was made flesh and dwelt amongst us. (वह शब्द सदेह हो गया और हमारे बीच रहा), वही उसके साथ जोड़ सकता है न। गुरु बाणी में बड़ा निर्णय किया है कि शब्द जिसका है-

गुर का शब्द गुर थै टिके होरै थै परगट न होए॥

वह शब्द जो है कोई गुरु ही अन्तर में प्रकट कर सकता है दूसरा नहीं। है अब भी, मगर इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर मिलता है। वह क्या करता है?

खैंचें सुरत गुरु बलवान।

उसमें यह सामर्थ्य है तुमको बिठाकर ऊपर लाये, उसका Contact (संपर्क) दे दे।

पार साजन अपार प्रतीम गुरु सुरत शब्द लंघावहि।

उस साजन को जिसको हमने मिलना है, वह सब हदों के पार है, पिण्ड, अण्ड-ब्रह्मण्ड, सचखण्ड से भी परे है, लय होने का मुकाम है। तो उसको हम कैसे मिल सकते हैं? गुरु हमारी सुरत को शब्द के साथ जोड़ता है और शब्द ले जाने वाली पावर है । तो शब्द के साथ कहते हैं, मिलने से, उसकी कमाई रोज-रोज करने से "अचिंत बसे मन आये" बगैर किसी (चिन्ता) के- उसमें बुद्धि का भी काम नहीं क्योंकि बुद्धि द्वारा तो वह मिलता ही नहीं। जब तक बुद्धि स्थिर न हो आत्मा का साक्षात्कार नहीं होता। तो यह चीज मिली कब? जब गुरु अंगद साहब के चरणों में आये हैं, और हकीकत मिली तो खोल-खोलकर बयान किया। अनेकों साधन पहले करते कराते रहे।

हर की पूजा दुलंभ है संतो कहणा कछु न जाई॥
बिन नावे होर पूज न होवी, सब भरम भूली लोकाई॥

नाम कहा, कहीं शब्द कहा, कि दुनिया नाम की पूजा को भूल रही है, शब्द की पूजा को भूल रही है। बाहर मुखी साधनों में लगे पड़े हैं। इस हक़ीकत से दूर हैं। है हम में, वह अगर प्रकट होगा को किस सूरत में होगा?वह जिस इज़हार में है जो इज़हार की सूरत है वह ज्योति और श्रुति है। बड़े प्यार से समझा रहे हैं, क्या हम उस प्रभु को अति सूक्ष्म और अगम है उसको हम पा सकते हैं? कौन-सी विधि है? कहते हैं हाँ, एक विधि है। किसी अनुभवी पुरुष से मिलो, वह तुमको शब्द Power (सत्ता) के साथ जोड़ देगा।

उसमें क्या है? ज्योति का विकास है, प्रणव की ध्वनि है। जब उसके साथ लगोगे, जैसे-जैसे लगोगे, रोज-रोज, वैसे-वैसे वह आगे बढ़ेगी। कहां पहुँचायेगी? जहां से वह आ रही है।

कस न दानीस्त के मन्ज़लगहे माशूक कुजास्त।
हमीनस्तो के अज़ाँ बांगे जिरस मि आयद॥

कोई नहीं जानता कि मेरे प्यारे कि मंज़िल कहाँ है। हाँ इतना है कि वहां से घंटे की ध्वनि आ रही है। इशारा दिया है। सब धर्म स्थानों में घंटे का चिन्ह है कि नहीं? तो ये अन्तर के चिन्ह रखे गये, नमूने, समझाने-बुझाने के लिये। आमिल (अनुभवी) लोगों की कमी के सबब से आज हम बाहरमुखी बैठे हैं, हकीकत से दूर पड़े हैं। प्यार से समझा रहे हैं-

गुरु के सबदे भ्रम कट्टिये, अचिंत बसे मन आये॥

तो फ़रमाते हैं, "गुरु का सबद गुर थै टिके होर थै परगट न होए।" फिर इसका तरीका बतलाया है जपजी साहब में जब सारा उपदेश जपजी साहब का दे चुके तो फ़रमाने लगे इस शब्द के साथ कैसे लगें? कैसे यह प्रकट हो। वहां लवाज़मा है। ग़ौर से सुनिये क्या फरमाते हैं :

जत पाहारा धीरज सुनियार। एहरण मत वेद हथियार॥
भौ खला अगन तप ताओ॥ भांढा भाओ अमृत तित ढाल॥
घड़िये सबद सच्ची टकसाल॥

कहते हैं कि जत का पहारा बनाओ। मिसाल देते हैं सुनार की दुकान की। अगर सुनार की दुकान हो, वहां वह भट्टी ही न बनी हुई हो फिर वह क्या करेगा? खाक? तो इसी तरह कहते हैं फिर जत क्या, ब्रह्मचर्य की रक्षा, यह जरूरी है। Chastity is life जिन्दगी है इसका पता करना मौत है। जिस मकान की बुनियाद बड़ी ज़बरदस्त है, मज़बूत है वह मकान मजबूत रहेगा। वह मकान की बुनियाद ही बोदी है फिर! तो इस लिये बड़ी कीमती चीज़ है मैं अर्ज करूंगा। वैद्य लोग, डॉक्टर लोग क्या कहते हैं? कि चालीस कतरे घी से एक कतरा खून बनता है, चालीस कतरे खून से एक कतरा मिज का बनता है, चालीस कतरे मिज से एक कतरा वीर्य का बनता है। कितनी कीमती चीज़ है? तो इसकी जितनी रक्षा करो उतनी जिन्दगी है, जितनी पात करो उतनी मौत है।

कामी कुत्ता तीस दिन मन में रहे उदास।

एक दिन का वेग आया हुआ तीस दिन उस पर असर रहता है। अरे भाई जो दिन-रात इसी वेग में जा रहे हैं उसका क्या हश्र (हाल) होगा? उसका न दिल सही, न दिमाग, सही न जिस्म सही। आज बीमारियां क्यों बढ़ रही हैं, मुआफ़ करना। जो मेरी उम्र के भाई यहाँ बैठे हैं वे इस बात के गवाह होंगे कि हमारे भाई-बहन पैदा होते थे हम उनसे पूछते थे किये कहां से आये हैं? तो कहते थे कि दाई दे गई है। कितनी Purity of life (जीवन की पवित्रता) थी हमारे माता-पिता की। हमें यह भी पता नहीं होता था कि बच्चे कहां से आते हैं। हम मान लेते थे कि हां भाई दाई दे गई होगी। Innocence (निष्पाप-वृत्ति) है चाहे आप इसको बेवकूफी में शामिल करो, मगर कितनी Purity of life है? आज छोटे बच्चे से पूछो वह सब कुछ बताता है। इसके लिए हम जिम्मेदार हैं, हमारे जीवन गन्दे हैं। तो पहली चीज़ इस शब्द को पाने के लिये है, जीवन की पवित्रता, मन करके, वचन करके और कर्म करके । आप कहेंगे कि जो गृहस्थ-आश्रम में आये हैं वे क्या करेंगे? करें भई वह शास्त्र मर्यादा के मुताबिक जीवन बनाये । मुझे कल ही एक चिट्ठी आई थी अमेरिका से, We are husband and wife in soul now, जो Companion of life (जीव साथी) है, जीवन यात्रा में एक, एक ग्यारह होते हैं। बच्चों का पैदा होना एक फ़र्ज है। जब औलाद की ख्वाहिश हो इसको बरतो। बस! बाकी छुट्टी कर दो। मगर हम समझते है यही गृहस्थ-आश्रम में है। जितने महात्मा आये ज्यादातर गृहस्थ-आश्रम से आये हैं। मगर यह उनका गृहस्थ-आश्रम नहीं जो हमने बना रखा है। तो फ़रमा रहे हैं "जप्पे पहारा" कितनी भारी सुना की दुकान हो, भट्टी ही न हो तो मिट्टी की बनी हुई तो आग कहाँ जलाओगे? अरे भई जिस्म ही मजबूत नहीं तो करोगे क्या? न दिल सही, न दिमाग सही। तो कहते हैं फिर "धीरज सुनियार", अगर दुकान भी बनी हो और धीरज न हो, सुनियार ही न हो तो Patience, perseverance. इस्तकलाल, धीरज-शुरू तो हुए हो तो घबराओ नहीं। एक बीज बीजा। उगा है कि नहीं, उसको खोद कर देखा, वह हवा लगती है, बीज उगता भी नहीं उगता। तुम उसको सींचते चलो धीरज के साथ रोज-रोज । Rome was not built in a day एक दिन में रोम शहर नहीं बना था। पहलवान एक दिन में नहीं बनता, डॉक्टर एक दिन में नहीं बनता। अरे भई, महात्मा भी एक दिन में नहीं बनता

है, Time factor is necessary. तो इस्तकलाल से, धीरज से सुनारा बनाओ। "धीरज सुनियार" "एहरन मत, बेद हथियार" अपनी मति को एहरन बनाओ। ज्ञान के अनुभव के लिये बार-बार उस तरफ इस को तवज्जो दिलाओ, Right understanding पैदा करो और जिस चीज़ की समझ आई है, उस चीज़ के लिये कारबन्द बनो धीरज के साथ। यह नहीं अभी नहीं हुआ, कल नहीं हुआ, यह नहीं हुआ, अरे भई जरूर होगा। होगा क्यों नहीं, जब महात्माओं ने पाया है। सब महात्मा कहते हैं हमने देखा है तो तुम भी देख सकते हो। तो आखिर क्या फ़रमाते हैं, "भौ खला अगन तप ताओ" भय किस चीज का? जिस्म किस वक्त खत्म हो जाये क्या पता है? जितनी कमजोरियां हैं उसको निकालो अन्तर से। जो अच्छे गुण हैं उनको धारण करो। अहिन्सा को धारण करो सत्य को धारण करो, ब्रह्मचर्य की रक्षा को धारण करो। सब में परमात्मा है उन से प्रेम करो, निष्काम सेवा करो तन और धन करके, ये धारण करो। बाकी जो कमजोरियाँ हैं उनको निकालो। इस बात का भय कि क्या पता दम आये, आये या न आये। तो बड़ी Golden Opportunity (सुनहरी मौका) जो हमें मिला है इसलिये हम तप करें, खूब टाईम दें, तप करने से मुराद दिन रात वक्त निकालो, सुबह, शाम, रात, जितना गुड़ डालोगे उतना मीठा होगा। "भौ खला अगन तप ताओ", फिर क्या फ़रमाते हैं। "भांडा भाव अमृत ढाल"। प्रेम और प्यार से, भाव-भक्ति का प्याला पिलाओ, क्योंकि यह प्रेम का मार्ग है, भाव भक्ति का मार्ग है। It is the science of the heart, not of intellect बुद्धि का यह मज़मून नहीं, यह दिल का मज़मून है, भाव-भक्ति का मज़मून है कि प्याला बनाओ प्रेम और भाव भक्ति का। तो उसमें क्या है? "घड़िये शब्द सच्ची टकसाल" ऐसी टकसाल में शब्द सुनाई देने लगेगा। लोग कहते हैं शब्द प्रकट नहीं होता है। होता है तो चला जाता है। अरे भाई जाये नहीं? जीवन खराब है। क्या करोगे फिर ! Perseverance (धैर्य) हो इस शब्द को पाने के लिए। ये जो महात्मा जितने भी आते हैं, वह शब्द-स्वरूप होते हैं। शब्द-निष्ठ और शब्द-श्रोत्रिय होते हैं, तो अन्तर से उस (प्रभु)से जुड़े हैं बाहर उससे जोड़ सकते हैं जो खुद ही नहीं जुड़ा वह तुम को कैसे जोड़ेगा? बड़ी मोटी बात है। इसलिए जितने भी महात्मा आये सबने कहा है कि वे शब्द-स्वरूप होते हैं।

आद अंगद अमर सतगुर सबद समायो॥

धन-धन गुर रामदास जिन पारस परस मिलायो॥

यह बाणी में आता है। एक ज्योति से दूसरी ज्योति जगती चली जाती है। एक अनुभवी पुरुष दूसरे को अनुभव जगा देता है, जो उससे मिलते हैं। वह जगती चली जाती है। तो कहते हैं गुरु से मिलो, वह तुमको शब्द से साथ जोड़ दे, उसकी कमाई करो, वह सहज ही में, जिसको तुम पाना चाहते हो वह मिल जायेगा।

गुर के सबद भ्रम कट्टिये अंचित बसे मन आये॥

कहते हैं गुरु का शब्द जब मिलेगा, यह भ्रम मिट जायेगा, हकीकत खुल जायेगी, वह अंचित ही अन्तर में प्रगट हो जायेगा, तुम खुद देखने वाले हो जाओगे। किसी की गवाही की ज़रूरत नहीं।

(3) गुरमुख हर हर नाम जपन॥

(4) हौं तिन के बलिहारणें मन हर गुण सदा रवन्न॥

कहते हैं यह कौन कर सकता है? कहते हैं गुरमुख! "गुरमुख हर-हर नाम जपन।" पहले शब्द कहा, अब नाम कह रहे हैं। नाम की भी वही तारीफ़ है जो शब्द की की गई है।

नाम के धारे खण्ड ब्रह्मण्ड।

वह (प्रभु) अनाम है। जब into being आया वह नाम हुआ । नाम से सब कुछ बना।

हर-हर उत्तम नाम है जिन सिरजेया सब कोए॥

और कहा है:

जेता कीता तेता नाओं, बिन नावें नाहीं कोई थाओं॥

कोई जगह ऐसी नहीं जहां वह न हो। तो कहते हैं गुरमुख होकर तुम जप सकते हो।

"सो गुर मुख देखे नैनी"

वह आँख बनेगी, जिससे वह नजर आता है, सबके अन्तर है । वह चमड़े की आँख नहीं, वह दिव्य-चक्षु है सबके अन्तर। वह बन्द है। उसको, जो गुरमुख बनता है, वह (गुरु) उसकी आँख खोल देता है। यही कुरान शरीफ़ में आता है कि हमारी आँखों पर खुदा ने मोहरें लगा दीं, कानों पर मोहरें लगा दीं,

कानों पर मोहरें लगा दीं, मुर्शिद (गुरु)उन मोहरों को तोड़ता है। आँख की मोहरें तोड़ता है, वह उसके नूर को देखने वाला हो जाता है, कान की मोहर तोड़ता है वह उसकी प्रणव की ध्वनि सुनने वाला हो जाता है। तो "सौ सयाने एक ही मत"। यही Christ (ईसा) ने कहा कि सारी Creation (सृष्टि) शब्द ने बनाई, शब्द के आधार पर चल रही है। इसी को Logos करके बयान किया है।यही एक चीज़ है जिसको मुखतलिफ़ (भिन्न-भिन्न) नामों से बयान किया है। वह सबका आधार है। उसको परमात्मा कह दो, उसको किसी और लफ़्ज से कह दो, अदृष्ट अगोचर कह दो, उसको None-Personality कह दो, लय होने का मुकाम और आनंद की सीमा है, मस्ती के इज़हार की वह जगह है, जहां यह सारा Creation (रचना) का इज़हार हुआ, तो कहते हैं यह गुरमुख बनने से मिलेगा। कहते हैं "गुरमुख हर-हर नाम जपन।" कहते हैं हम उनके भई बलिहार जाते हैं, क्योंकि वे हर वक्त उसी नाम में समाये हुये हैं। जो उन से मिलते हैं वे भी उसी नशे को पा जाते हैं।

जिन्नी नाम धियाइया गये मुसक्कत घाल॥
नानक ते मुख उजले केती छुट्टे नाल॥

जिन्होंने नाम को ध्याया है उनका जीवन सफल हो गया। उनके अपने मुख मालिक की दरगाह में उजले हो गये और उनके साथ अनेकों जीवों का उद्धार हो गया।

गुर मुख कोट उद्धरदा दे नांवें इक कणी॥

थोड़ा सा उभार देता है, थोड़ा सा Way up करने का, इसी में उसकी Greatness (महानता) है । लेक्चर, कथा, ज्ञान तो कोई भाई भी कर सकता है। सवाल यह है कितनी Rise (चढ़) कर सकता है, कैसे Body-Consiousness (पिण्ड) से हमको ऊपर ला सकता है।

खैंचे सुरत गुरू बलवान॥

यह समर्था कहाँ है? जहां है, उसके पास बैठो। वह तुमको Way up (अंतर का रास्ता) करेगा। तुम इकरार करोगे कि हां चीज़ अन्तर में है। तो सारे महापुरुष यह कहते हैं। गुरुनानक साहब से सवाल किया गया है कि महाराज यह नाम जो आपने जिक्र किया है कि यह सब खण्डों-ब्रह्मण्डों को लिये खड़ा है, तो यह कहां से लें। फरमाने लगे:

"जहं नाम मिले तहं जाओ"।

बड़ी खुली आज़ादी दी। यह नहीं कहा कहां जाओ और कहां नहीं जाओ। कहते हैं यह नाम है भई, नाम पावर है -

"नाम जपत कोट सूर उजियारा"।

और कहा-

"राम नाम कीर्तन रत्नवत्थ हर साधु पास रखीजे"॥

उसमें कीर्तन हो रहा है, अखण्ड की ध्वनि हो रही है। जाओ जहां से मिलता है ले लो। फिर आगे बतलाते हैं, कैसे मिलेगी? जवाब भी देते हैं कि -

"गुर परसादी कर्म कमाओ"॥

किसी अनुभवी पुरुष की कृपा से इसको तुम नाम पा सकते हो। अक्षरी नाम हो तो सारा जहान ही नाम धारी हो जाये। यह अक्षरों से ला बयान चीज़ है, इन्द्रियों से अदृष्ट और अगोचर है। जब तक हम उस लैवल में नहीं जाते उसको नहीं पा सकते हैं। बड़ा मोटा जवाब दिया है। यह हरि, अति सूक्ष्म और अगम है। जब तक वहं उसी लैवल में नहीं आते हम उसको देख नहीं सकते हैं। कई भई कहते हैं कि अगर खुदा है तो इस घड़ी को उठा कर यहां रख दें। अरे भई वह अति सूक्ष्म और अगम है। अगर यह आप में Develop (प्रकट) हो जाये, तुम दुनिया को हिला सकते हो, घड़ी क्या चीज़ है। वह महान सुरत है। हमारी आत्मा उसी सुरत की छोटी सुरत समझो, छोटे सर्कल पर है। इसमें वही ताकतें है जो उसमें है। अगर इसको Develop (बढ़ाओ) करो तो चलती गाड़ी को रोक सकते हैं हम। कल ही ज़िक्र आया था न, हम शेर के बच्चे हैं। समझे!

कहो कबीर एह राम की अंश।

बड़ी भारी ताकत हमारे अन्तर में है। मगर मन-इन्द्रियों के घाट पर फैलाव में होने के कारण हम निर्बल हो रहे हैं। सूरज की किरणें आये तुम को चलाती नहीं। अगर उसे मोटे शीशे से पार करके देखो तो दूर से आग लग जाती है। अरे भई सुरत के सिमटाव में सब कुछ है। जाओ अन्तर। जो उस नशे को पाते हैं, वे उस नशे में रहते हैं। All glory and beauty is in you (सब कुछ तुम्हारे अन्तर है), महापुरुषों ने पाया है। वे कहते हैं, तुम भी पा सकते हो। जब उस महारास, उस नशे को पा जाता है दुनिया का आना-जाना खत्म हो जाता है।

जहां आसा तहां वासा।

और क्या। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि हम भई कुरबान हैं गुरमुख पर, जो नाम के साथ रंगे पड़े हैं, हम उन पर कुरबान हैं। उनको क्या है? दिन-रात उसी नशे में हैं। जो उनको मिलता है उसको भी वही नशा मिल जाता है।

(5) हौं तिनके बलिहारणे जिन मन हर गुण सदा रवन्न॥
गुर सरवर, मानसरोवर है बडभागी पुरख लहन्न॥

कहते हैं गुरु क्या है? अब देखिये गुरु जिस्म नहीं है, जिस्म रखता है। उसमें उस शब्द का इज़हार है Christ Power, God Power जिसको कहते हैं। वह क्या है? वह कहते हैं, अमृत का सरोवर है। कोई बड़े भाग्य वाले पुरुष उसको पाते हैं।

गुरु को मानुष जानते जन्म-जन्म होएं स्वान।

जो जिस्म में उस (पावर) को पूजते हैं अरे भई एक आदमी है, हमारा प्रीतम। एक मकान में बैठा है। हम उसको सजदा करते हैं (सीस झुकाते हैं) भई सजदा तो उस प्रीतम की है, जाहिर मकान को करते नज़र आते हैं। जो खाली मकान ही को सजदा कर रहा है वह अभी दूर है। जो उसको कर रहा है, जो मकान में है वह हकीकत के नज़दीक है। वह चलता-फिरता परमात्मा है उसमें इज़हार कर रही ताकत परमात्मा की है वह लोगों को नूर बिखेर रही है। वह चलता-फिरता यह कहो, पहले तो हमें इन्सान नज़र आता है, मगर जब Inner Eye (अन्तर की आँख) खुलती है तो क्या कहता है? "मौला आदमी बण आया।" गुरु रामदास जी साहब के मुतल्लिक गुरु अर्जन साहब जी ने फ़रमाया -

हरजिओ नाम परियो रामदास॥

हरि का ही नाम रामदास है। रामदास इन्सान नहीं है।

मरदाने खुदा खुदा न बाशन्द। लेकिन ज़े खुदा न बाशन्द।

खुदा के बन्दे खुदा नहीं होते मगर खुदा से जुदा भी नहीं होते । यह उन लोगों का कलाम है जो ज़रा डरते हैं। शरीयतों (समाज धर्म की मर्यादा से) और जो उसको आशकार (प्रकट) देखते हैं, क्या कहते? लाधड़क होके कहते हैं।

मन खुदारा आशकारा दीदा अम। दर सूरते इसां खुदारा दीदा श्रम॥

कि मैंने प्रभु को जाहिर जहूर देखा है, इन्सान की शकल में चलता-फिरता देखा है। जब आँख खुलती है, वही पहले इन्सान नज़र आता है, फिर कुछ और नज़र आता है। आँख के खुलने का सवाल है। अनुभव को पाने का सवाल है। हमारे हजूर (श्री हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज) से एक बार पूछा गया कि महाराज हम आपको क्या कहें? कहने लगे, मुझे भाई समझो, बुजुर्ग समझो, पिता समान समझो, उस्ताद की हैसियत में समझो, मेरे कहे के मुताबिक चलो अन्तर। अन्दर उन मण्डलों में उसकी शान को देखो, क्या मदद देता है, फिर जो चाहे कह लेना। बाहर तो कहता है मैं तुम्हारी तरह इन्सान हूं, मैं आज़िज़ हूं, मैं दास हूं। इसका मतलब है कि हम जिन्सियत (सहजातीयता) कुदरती खासा (गुण) है। वे चाहते हैं कोई भाई समझ के चले अपने घर को, और कुछ मतलब नहीं। उसे कुछ लेना नहीं, देना नहीं। वह Right Understanding (सही नज़री) देता है। अरे भई, तू आत्मा देहधारी है, आत्मा है, देह नहीं। यह छोड़नी पड़ेगी, अभी छोड़ना सीख जाओ।

ऐ दिल ज़े जां गुजर कुन ता जाने जाँ बबीनी।
बिगुजार ई जहाँ रा ता आँ जहाँ बबीनी ।

कहते हैं इस जिस्म-जिस्मानियत की दुनिया से ऊपर आ ताकि तू उस (दिव्य) दुनिया को देखने वाला बन जाये।

अरशेस्ते नशेमने तो शरमत बादा।
कानी ओ मुकीमो रवसो खाशाक शवी॥

कि ऐ रूह, ऐ आत्मा, तू अर्शों (आसमानों) की रहने वाली है। कहाँ मिट्टी में फंसी हुई है तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं।

गुर सरवर मान सरोबर है बडभागी पुरख लहन्न॥

नहीं तो गुरु के पास बहुत लोग वे भी तो आते रहते हैं जो कुराहिया उसको कहते रहते हैं। गुरू नानक साहब को (कुराहिया) कहा कि नहीं? फिर! सब महापुरुषों का यही हाल हुआ। महावीर स्वामी को बट्टे मारते थे लोग। और और महापुरुषों को भी। जिसकी आँख नहीं खुली उस बेचारे का क्या कसूर है?

(6) सेवक गुरमुख खोजेया हंसले नाम लहंन॥

कि जो सेवक बनकर गुरमुख होता है सेवक बनकर। दो चीज़ें बयान की हैं, एक सेवक, एक गुरमुख। गुरमुख तो वही है जो गुरु की बात को हमेशा Ruling (मुख्य) मानता है, कि यह सही है सोलह आने। वेद कुरान वही है। जो गुरु का लफ़्ज है उसके लिए वेद कुरान, सब कुछ वहीं है। फिर सेवक बनो। अब सेवक की तारीफ गुरबाणी में आई है।

गुर के ग्रह सेवक जो रहे। गुर की आज्ञा मन में गहे॥

मन करके माने, प्यार माने, दिलो जान से माने।

गुरु के ग्रह सेवक जो रहे गुर की आज्ञा मन में गहे॥

हर हर नाम रिदे सद ध्यावे। आपस को कर कछु न जनावे॥

फिर यह नहीं, मैं सेवक हूं, मैंने यह किया है, मैंने यह किया है। न भई, तेरी दया से जो हो रहा है। जो यह भाव नम्रता का बनने लगा, जो नीची जगह होगी वहां सब पानी भरने जायेगा। Humility नम्रता, आजज़ी, गरीबी, यह सन्तों का श्रृंगार है। जहां पर मैं-मैं का सवाल है हीले बने हुये हैं मिट्टी के, वहां पानी कहां ठहरेगा? बख्शिश कहां होगी? तो सेवने वाले बनो गुरु के। फिर आगे क्या कहते हैं, गौर से सुनिये।

मन बेचे सतगुर के पास ॥ तिस सेवक के कारज रास॥

अपनी मनमानी बातें न करे, जो गुरु कहे उसके मुताबिक करे, सेवने वाला बने और फिर गुरमुख हो, सम्मुख रहे, उसको हर वक्त सम्मुख जाने।

गुरु को सिर पर राखते चलते आज्ञा माहिं।

हम तो समझते हैं कि गुरु कहीं काशी में या हरिद्वार में या और कहीं और शहर में बस रहा है या अमेरिका में या इंडिया में है। न भई। जब नाम देता है गुरु, तो साथ हो बैठता है। सारे महापुरुष यही कहते हैं और उस वक्त तक यह नहीं छोड़ता जब तक वह इसको धुरधाम न पहुंचा ले, सत्तपुरुष की गोद में न पहुंचा ले। Christ (ईसा) ने कहा- I Shall never leave thee nor forsake thee till the end of the world, तो कहते हैं -

गुरु को सिर पर राखते चलते आज्ञा माहिं।
कहें कबीर तिस दास को तीन लोक डर नाहिं॥

तीनों लोकों में उसको कोई डर नहीं। हर वक्त वह हज़िर है वह देख रहा

है हमारे हर एक Action (कार्य) को, इसको कहते हैं गुरमुख। हम समझते हैं गुरु कहां देखता है। चलो जो मर्जी कर लो। आगे पीछे का सवाल नहीं, अरे भई हर वक्त वह साथ बैठा देख रहा है। हमारे हज़ूर फ़रमाते थे कि पाँच साल का बच्चा हो उसके सामने हम कोई गुनाह नहीं करते। अरे भई वह हाज़िर-नाज़िर देख रहा है तो कोई गुनाह हम कर सकते हैं? सुखमनी साहब में सब उपदेश देकर आखिरी अष्टपदी में क्या फ़रमाया-

पूरे गुर का सुण उपदेश॥ पारब्रह्म निकट कर पेख॥

पूरे गुरु का यह उपदेश है कि वह पारब्रह्म तेरे निकट से निकटवर्ती है। यह पहली बात। अगर इसको देखे तो ये गुनाह कौन करेगा? तो गुरु उसी का इज़हार है। वह जिस्म नहीं, जिस्म पर वह ताकत इज़हार कर रही है, तुमको उसके साथ जोड़ने के लिये जिसका शरीक कोई नहीं, सानी कोई नहीं, कोई भाई नहीं, बन्धु नहीं, अरे भई कौन तुमको उसकी खबर देगा और कौन तुमको उसके साथ जोड़ेगा? यही कहना पड़ेगा कि वह ताकत किसी पोल पर इज़हार करके तुमको आप अपने साथ जोड़ रही है। अन्तर से वह परमात्मा से जुड़ा पड़ा है, बाहर दुनिया से। बड़ी हमदर्दी से, भाई घबराओ नहीं, मैं भी इसी तरह से दुनिया से गुजरा हूँ, तुम भी गुजर सकते हो, मिसालें पेश करता है और अन्तर में जब जाता है, सामने आ खड़ा होता है, चल भई मैं तुम्हारे साथ हूं।

बा तो बाशद दर मकानो लामकां।
चूं बिमानी अज़ सरा ओ आज दुकां॥

जो तुम्हारे साथ रहे, यहां भी और जिस्म को छोड़ो तब भी, ऐसे महापुरुष का नाम गुरु है, साधु और सन्त है। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, क्या? कि, "गुर सरवर मानसरोवर है बडभागी पुरख लहंन।" "सेवक गुरमुख खोजदे से हंसले नाम लंहन।" वह हँस बन जाते हैं। हँस-वृत्ति को पा जाते हैं। हँस किसको कहते हैं? जिसमें सत्य और असत्य का निर्णय हो, फिर वे हकीकत में सन्यासी बनते हैं। यह माया उनकी आँखों पर परदा नहीं डाल सकती है। वे नाम मुज़स्सम (सदेह) हैं। नाम ही का रंग देते हैं, हर वक्त उसी नाम को हर एक में देखते हैं। वे इस गति को पा जाते हैं। इसलिये कहते हैं हम गुरु पर कुरबान जाते हैं बार-बार। एक शमा आती हैं हजारों को रोशनी दे जाती है। कई बुझी हुई शमाओं को जगा जाती है। यह अवस्था है, किन लोगों

की? जो गुरमुख होकर सेवक बने हैं। गुरुमुख कभी यह दम नहीं मारता, वह कहता है मैं दास हूं। क्यों। गुरु अमरदास जी साहब जिनकी बाणी है, उन्होंने बारह वर्ष पानी ढोया है, समझे! सेवा की जो किसी जगह मिसाल नहीं मिलती है। खैर बारह वर्ष पानी ढोना भी कोई बड़ी बात नहीं। जिस भाव से वे ब्यासा नदी जाकर, पाँच कोस (15 किलोमीटर) पर थी, पानी लाते थे वह भाव का सवाल है। पानी लाते थे तो पीछे पाँव जाते थे कि कमर गुरु की तरफ न हो। देखो कितना भाव है। हमारे में क्या है, मुकाबला करके देखो। हम चाहते हैं कि शब्द हमारे अन्तर प्रकट हो, हम उस जगह पहुंचें। अरे भाई तुम देखो तो सही तुम कर क्या रहे हो? सेवक नहीं बन रहे, हम गुरु बन रहे हैं मुआफ करना। सेवक बनना ही कोई नहीं चाहता। गुरुमुख बनकर भी सेवक बने तब बात है। सेवक ही, याद रखो स्वामी बनता है। स्वामी,सेवक पहले बनता है। गुरु, सिख पहले बनता है, फिर सिख, गुरु बनता है। समझे ! हममें सिख-भाव या सेवक-भाव नहीं आया इसलिये, चीज़ है, गुरु मिलने पर भी, इतनी ऊंची दौलत मिलने पर भी हम सेवने वाले नहीं बनते।

सत्गुर सेवण से बडभागी॥ राम नाम धुर अन्तर जागी॥

सेवना क्या है? नेक-पाक रहो, सदाचारी रहो, समझे। रोज वक्त दो, आखिर जाना है। जितना गुड़ डालोगे उतना मीठा होगा। ज्यों-ज्यों उसके साथ लगेंगे, त्यों-त्यों शांति आयेगी। कुदरती बात है। हमको, मुआफ करना ऐसे महापुरुषों से मिले हुये बर्षों हो गये, हम कहां है? देखने वाली बात है। अगर हमने उस आदर्श को नहीं पाया जिस बात का ज़िक्र महापुरुषों ने किया है तो त्रुटि कहां है, गलती कहां है? हम में। क्योंकि जो करने वाले हैं, वे पा रहे हैं। अगर नहीं कर रहे हैं, नहीं पा रहे हैं Like School (स्कूल की तरह है यह)। याद रखो जब भी अनुभवी पुरुष आता है तुमको वह इन लम्बी-चौड़ी राह-रस्मों में, इधर-उधर में नहीं फंसाता। वह यही कहता है, भई रहो, जिस समाज में रहो। चलो। यह चीज़ सब में है। लोग इसी को, जब महात्मा चले जाते हैं, उन ही में लग जाते हैं। हकीकत नहीं रहती, बस। नतीजा क्या होता है? भूल में चले जाते हैं, जीवन बरबाद हो जाता है। महात्मा जब कभी भी आता है यह Awaken (जागृत) करता है, भई हकीकत यह है। जिस समाज में हो, रहो। जाओ तुम्हारे अन्तर है, ले लो। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं।

गुर सरवर मानसरोवर है बडभागी पुरख लंहन॥
सेवक गुरुमुख खोजेया हंसले नाम लंहन॥

तो कहा है :

नदर करे ताँ गुरु मिलाये॥ सेवा सुरत सबद चित्त लाये॥

यह यह सेवा बख्शता है। पहले ऐसे अनुभवी पुरुष का मिलना बड़ी उस मालिक की दया पर है। तो वह क्या करता है? हम को सुरत की सेवा देता है, शब्द के साथ जुड़ने की। तो सुरत शब्द योग की वह तामील देता है, अपनी आत्मा को उस शब्द परमात्मा इज़हार में आई ताकत के साथ जोड़ो, उसका रूप बन जायेगा उसके सारे गुण इसमें प्रवेश करेंगे। आगे ही है मगर फैलाव के कारण यह उसको भूल चुकी है। जब और उस से चार्ज होते हैं सब आलायशें कट जाती हैं। वह उसी रंग में जाग उठता है। वह कह उठता है I and my father are one(मैं और मेरा पिता एक हैं।)

पिता पूत एके रंग लीने।

इस अनुभव को पा जाते हैं। वह यह नहीं कहता है मैं करता हूं। Christ (ईसा)से पूछा गया एक बार कि तुम हमेशा अपने पिता का ज़िक्र करते हो, क्या अच्छा हो किसी दिन तुम अपने पिता के हमें दर्शन करा दो। कहने लगे, "अफसोस मैं इतनी मुद्दत तुम्हारे दरमियान रहा, तुमने यह न जाना कि पिता मुझ में बैठ कर काम कर रहा है। अच्छा भई यह भी नहीं जाना तो कम से कम जो लोग मुझे मिलते हैं लोगों को जो फ़ैज (लाभ) मिला उसी से तुम जान लेते।" कौन महात्मा है? जो बिठाये और किसी को अन्तर में तज़रबा दे दे। कितने महात्मा मिलते हैं दुनिया में? अगर तुम देखते हो कि एक महात्मा से कई सैंकड़ों, हज़ारों की रूह पिण्ड को छोड़ कर ऊपर आती है, अन्तर की आँख खुलती है, ज्योति का विकास होता है, प्रणव की ध्वनि जारी होती है, दिनों दिन तरक्की कर रहे हैं, अरे भई और सबूत इससे ज्यादा तुमको क्या चाहिये? यह Christ कह रहे हैं। कोई लेबल थोड़ा है? यह तो परमात्मा की तरफ से Commission (प्रभु आज्ञा) मिलती है, दुनिया की तरह से Commission नहीं मिलती है याद रखो। Republic में (प्रजातंत्र) में प्रेजीडेंट को चुन सकती है पब्लिक, मगर अन्तर में तो भई परमात्मा ही Commission देता है जिन्होंने दुनिया में काम करना होता है। उसकी Selection (प्रभु से) होती है, लोगों के चुनाव से नहीं होती है।

(7) नाम ध्यायन रंग स्यों गुरमुख नाम लंगन॥

कहते हैं जो गुरमुख बनते हैं, "रंग स्यों" नशे में आकर नाम को ध्याते हैं। नाम नशा ही है, नशे का समुद्र ही है, निज-आनंद है। परमात्मा निज-आनंद है न, यह खुमार है एक।

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात॥

हमेशा एक नशे में उसको ध्याते हैं और नशे में जाते हैं, जैसे शराबी पीकर और पीता है और नशे में जाता है, ऐसे ही रूह उस नाम के रंग का, आत्म रंग पाकर और नशे में जाती है। कहते हैं इस नाम के साथ कौन लग सकता है? कहते हैं गुरमुख होकर। यह गुरमुख की चीज है। तो गुरु के सम्मुख बैठा हो अनुभवी पुरुष के। अपने-आप यह रंग नहीं आता है। किताबों में इसका ज़िक्र है जरूर। कई बार मैंने आगे भी ज़िक्र किया है चैतन्य महाप्रभु का। तो वे कहा करते थे- हर एक महापुरुष का अपना बोला होता है- "हरि बोल" करके बतलाया करते थे। "हरि बोल, हरि बोल, हरि बोल," वे अनुभव के नशे में आकर गाते थे न। वे एक धोबी घाट पर चले गये। वहां धोबी घाट के किनारे खड़े हो कर कहने लगे, "हरि बोल" धोबी ने समझा शायद कोई माँगने वाला आ गया है। चुप रहा। एक बार दो बार, चार बार कहा। कहा, "मैं नहीं बोलता"। कहने लगे, "बोलना पड़ेगा, हरि बोल"। तवज्जो दी। देखा (धोबी ने) यह जान छोड़ता है नहीं, चलो कह दें। हरि बोल, हरि बोल कहा कि नशा आ गया। वह भी नाचने लगा। हरि बोल, हरि बोल करने लग गया। काम छोड़ दिया, नाचने लग गया। साथ के भाइयों ने देखा हमारे भाई को क्या हो गया? आकर पूछा, अरे भाई क्या है? कहने लगा, "हरि बोल"। Infection (छूत) से Infection बनी। सारा धोबी घाट ही नाच उठा। अरे भई यह नशे वालों की बात है। नाम का नशा किनको मिलता है? गुरमुखों को; और गुरमुख कौन होता है? जो सेवक बने। हमको थोड़ी चीज़ मिल जाये तो गुरु बन बैठते हैं। छप्पड़ में पानी थोड़ा, सेर, दो सेर, पाँच सेर हुआ, लूटा गया, कीचड़ रह गया। आप भी रोता है, दूसरे भी रोते हैं।

(8) नाम धियायन रंग स्यों गुरमुख नाम लंगन॥

(8) धुर पूरब होवे लिखिया गुर भाण मन लयन॥

धुर से मालिक दया करे, वह (गुरु) मिले, यह गुरु की रज़ा में रहे, वह चीज़ ले जाये।

धुर कर्म पाया तुध जिनको से नाम हर के लागे।
कहो नानक तहं सुख होवा तित घर अनहद बाजे॥

बड़ी साफ बात है। यह पढ़ने-लिखने का मज़मून नहीं है, यह तो अनुभव का मज़मून है। कब मिलता है? तुम जब उतने ऊँचे आओ, इन्द्रियों के घाट के ऊपर आओ। हम उसको कहाँ ढूंढते हैं? इन्द्रियों के घाट पर। भई यही एक जवाब है, परमात्मा को पा सकते हो? हाँ ! बड़ी Definite (पक्की) बात, कोई शक नहीं, जैसे दो और दो चार। परमात्मा की जो इज़हार में आई ताकत है, वह ज्योति स्वरूप और प्रणव की ध्वनि है। कब मिलती है? ~~जब इन्द्रियों में आई ताकत है, वह ज्योति स्वरूप और प्रणव की ध्वनि है। कब मिलती है?~~ जब इन्द्रियों के घाट के ऊपर आओ। कोई ऐसा पुरुष जो तुमको इन्द्रियों के घाट के ऊपर लाकर उसका Contact (संपर्क) दे सके, उसके पास बैठो। गुरुमुख बनो। फिर उसके सेवने वाले बनो। जो हुक्म देता है उसकी बजावरी (पालना) करो। वह क्या हुक्म देता है? नेक-पाक और सदाचारी बनो। अभी मैंने कहा है कि शब्द की टकसाल कैसे घड़ी जा सकती है, किस टकसाल में घड़ा जाता है? जहां जत का पहारा हो, धीरज का सुनियार हो, भय की खलायें हों और दिन-रात तप करने वाला हो। यह नहीं कि चुपचाप बैठे-बैठे मिल गया।

जिन पाया तिन रोया। हंसी खुशी जे पिया मिले,
तो कौन दुहा गज होय॥

हाफ़िज़ साहब कहते हैं-

ईं कारे रिन्दारे बलाकश बाशद।

सिर से गुज़रे हुओं का यह मज़मूं है। ऐसे-इशरत (ऐश्वर्य) में आराम से सो गये, आराम से जाग उठे, कभी आधा घंटा पन्द्रह मिनट बैठ गये, न बैठ गये, बातें बनालीं, इस तरह तो नहीं मिलती भई। जिन महापुरुषों ने पाया है उन महापुरुषों के जीवन की तरफ़ नज़र मारकर देखो, कितनी उन्होंने घालना घाली है। एक मामूली एक साल की जमात पास करने के लिये तुम्हें एक साल काम करना पड़ता है, चार-पाँच घंटे स्कूल में दो, तीन, चार घंटे घर में, आठ नौ घंटे रोज पढ़कर साल में एक जमात पास होती है। यहां तुम करो ही कुछ नहीं, ऐशो-इशरत के सामान करो, कैसे तुम उसको पा सकते हो?

ग़नीमत समझो कि कोई महापुरुष तुमको मिल गया, Inner way up कर दिया, नहीं तो ऐसे महात्मा कामयाब मिलता है जो आपको Inner way up करके Contact(संपर्क) दे। फिर उसके सेवक बनो भाई, सेवने वाले बनो। सेवक यह नहीं कि उसका पानी ढोवो। अरे भई पानी ढोने की जरूरत पड़ जाये तो बेशक कर लो। मगर उसकी असल क्या है?

गुर सेवा गुर मत्त है।

गुरु सेवा क्या है? उसकी दिल-दिल को राह बनाना पहली बात। फिर वह जो हुक्म दे करो, Receptive बनो जैसे उसने पाया तुम भी पा जाओगे। किसी महापुरुष का जीवन लो। रातें जाग-जाग कर गुजारी हैं। जिसने पाया है भई उसने तो इसी तरह पाया है, जो पा रहे हैं वे इसी तरह पा रहे हैं। यह ग़नीमत समझो कि आगक लौ जलाई आपको मिल जाती है। उसको और बनाओ।

मिल साधु लूकी लीजै।

लूकी ले लो और जगा लो अपने अन्तर। इस सिलसिले को ठीक कर लो। कर्मों का नाश करके आना जाना खत्म करो।

(9) धुर पूरब होवे लिखेया गुर भाणा मंन लयंन
वडभागी घर खोजेया पाया नाम निधान॥

अब गुरु क्या कहता है कि भई यह घर जो है इसको खोजो। चलो अन्तर। बड़े भाग्य वाले हैं जो इस घर को खोजते हैं।

इस काया अन्दर नौ खण्ड पृथमी हाट पटण बाजारा॥
जो ब्रह्मण्डे सोई पिण्डे जो खोजे सो पावे॥
देही नगरी उत्तम थाना पाँच लोक बसे प्रधाना॥

Macrocosm is in the microcosm (पिण्ड में ही ब्रह्मण्ड है) कहते हैं वह बड़े भाग्य वाले हैं जो इसको खोजते हैं, इस मकान को, ''वडभागी घर खोजैया पाया नाम निधान।'' नाम का ख़जाना इसके अन्तर मिलता है, जो अन्तर्मुख होते हैं। बाहर नहीं, चीज़ तुम्हारे अन्तर है इन्द्रियों के घाट से ऊपर। नाम कहां है?

नौ निध अमृत प्रभ का नाम॥ देही में इस का बिसराम॥

नौ निधियों के देने वाले प्रभु का नाम है। उसका बासा आप की देह के अन्तर है समझे! कहां पर है? फ़रमाते हैं :

अदृष्ट अगोचर नाम अपारा॥ अत रस मीठा नाम प्यारा।

बाहरी दृष्टि का मज़मून नहीं, अगोचर, इन्द्रियों के घाट के ऊपर आकर मिलता है। बड़ा अपार नाम, बड़ा मीठा नाम है, नशे के देने वाला नाम है। तो बड़े प्यार से फ़रमा रहे हैं। क्या?

बडभागी घर खोजेया पाया नाम निधान॥

नाम का खजाना तुमको मिले, वह तुम्हारे अन्तर में है। जो चीज़ जहां है वहीं मिलेगी न। अगर तुम बाहर से हटकर अन्तर्मुख बैठते नहीं तो वह चीज़ तुम्हें कैसे मिलेगी? अन्तर में एक रस भी है। महापुरुष तुमको पहले दिन ही उसका, थोड़ी सी ज्योति का प्रकाश, थोड़ी प्रणव की ध्वनि दे देता है। फिर तुम उसको रोज़-रोज़ बढ़ाओ, सेवने वाले बनो, उसके हुक्म की बजावरी करो, जीवन को नेक-पाक सदाचारी बनाकर कामयाब हो जाओगे। जिस गति को उसने पाया है तुम भी पा जाओगे। मगर Time Factor (समय लगना) जरूरी है-

(10) **बडभागी घर खोजेया पाया नाम निधान॥**
गुर पूरे वेखालेया प्रभ आतम राम पछान॥

अब सवाल आता है क्यों महाराज आपने देखा भी है? कहते हैं, हां! गुरु पूरे ने दिखाया है। यही सवाल जब हमारे हजूर (बाबा सावन सिंह जी) से किया गया तो कहा है, "गुर पूरे ने दिखाया है मुझे।" यह भी कहते हैं "गुर पूरे वेखलेया" और क्या हुआ? कहते हैं वह प्रभु मेरी आत्मा में रम रहा है; मैं उसको देख रहा हूं। दिखाया है उसने। ठीक है। इकरार कर रहे हैं। कोई अंहकार थोड़ा है? गुरु कृपा से देखा है न। भई अगर एक आदमी देख कर कहता है, हम लोगों मेंयकीन होता है, हाँ हम भी देख सकते हैं। यह इसलिये है।यह अंहकार नहीं है, यह इकरार है कि हमने इस गति को पाया है। लोग पूछते हैं न,क्यों भई प्रभु है। कहते हैं,हाँ देखा है। पहले सब कुछ बयान किया, ऐसे, ऐसे, फिर सेवक भी बने, गुरमुख भी बने। आखिर कहते हैं क्यों भई तुमने देखा भी है? कहते हैं हां देखा है। इकरार कर रहे हैं। बात वही है न-जो आप कहे। फिर किसी की गवाही की जरूरत नहीं। इस वक्त आपके सामने यह रखा गया कि परमात्मा है, सब महापुरुषों ने कहा है। महात्मा बुद्ध जिसके मुतल्लिक बहुत ग़लतफ़हमी (भ्रम) है, वे भी कहते हैं मगर अपने तरीके से

बयान किया है। बाकी सब महापुरुषों के कलाम, कुरानशरीफ़, बाईबल, वेद, गीता, यह वह सब आपके सामने पेश किये गये। परमात्मा है? क्या हम उसको देख सकते हैं? तो मैं यह अर्ज कर रहा था कि यह दौलत तुम में है, अन्तर्मुख होने की जरूरत है। समझे! अन्तर में कब होवोगे तो इस चीज़ को ऐसे ही देखोगे जैसे पूर्ण पुरुषों ने देखा है। समझे! ऐसे ही हम भी-कौन देखेंगे? जो गुरमुख बनेंगे। और गुरमुख बनकर जो सेवक बनेंगे, सेवने वाले। तो सेवना सबसे बड़ी बात है। जो सेवने वाले नहीं, खाली कहेंगे बिल्टी सीधी पहुंच जायेगी। हमारे हजूर फ़रमाते थे कि वह ले जायेगा, मगर साफ करके ले जायेगा। ~~जिसके अन्तर प्रेम की जबरदस्त लौ जली है, प्रेम की ज्वाला, मगर साफ करके ले जायेगा।~~ जिसके अन्तर प्रेम की जबरदस्त लौ जली है, प्रेम की ज्वाला में सब कुछ हवन हो जाता है। मगर प्रेम भी जबरदस्त Rulling बन गया, तू-तू, मैं-मैं, के झगड़े खत्म हो गये, फिर भी साफ़ हो जायेगा, मगर फिर भी जिसका प्रेम हो, उसका कहना मानता है उसकी रूह बेशक, जैसे उसकी (गुरु की) खण्डों ब्रह्मण्डों का सफर करती है। ऐसे हमारी (रूह) भी सफ़र करने लग जायेगी।

◆◆◆◆◆